इथियोपिया की लोक कथाऐं–2

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Ethiopiya Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of Ethiopia-2)
Cover Page picture: Obelisk of Axum, Ethiopia
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2016
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Ethiopia

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2016

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 5
1 धन के बच्चे 7
2 करामाती भाले 9
3 एक आदमी ने चोरी करना सीखा 12
4 चोर और कुरसी 15
5 चालाक चोर 18
6 एक डाकू और तीन चोर 22
7 औरतों ने अपना बड़ापन कैसे खोया 25
8 औरतें और बरतन 28
9 एक औरत और एक शेर 32
10 सुनहरा घोड़ा 36
11 सोना उगलने वाला गधा 39
12 बोतल का सॉप 47
13 झूठी कसम खाने का फल 52
14 दो यात्री 55
15 एक विद्यार्थी की कहानी 58
16 बेवकूफ नौकर 64
17 होशियार चरवाहा 67
18 सिनज़ैरो की कहानी 74

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयीं है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2016**

इथियोपिया की लोक कथाऐं–2

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा क्रम से।

इस प्रकार अफ्रीका इस संसार का साइज़ और जनसंख्या दोनों में दूसरे नम्बर का महाद्वीप है। इस महाद्वीप में **54** देश हैं। इस महाद्वीप का अपना लिखा हुआ और इसके बारे में लिखा हुआ साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में बहुत कम मिलता है इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है। इस महाद्वीप से लगभग **400** से अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की गयी हैं।

अफ्रीका के **54** देशों में से इथियोपिया, नाइजीरिया, घाना, तन्ज़ानिया और दक्षिण अफ्रीका देशों की लोक कथाऐं काफी संख्या में मिल जाती है इसलिए उन देशों की लोक कथाऐं उन देशों के नाम से ही दी गयी हैं। अफ्रीका की लोक कथाऐं तीन भागों में बॉटी गयी हैं – अफ्रीका की लोक कथाऐं, दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं और पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं। शेष देशों की लोक कथाऐं या तो अफ्रीका की लोक कथाओं में शामिल कर दी गयी हैं या फिर उन देशों के नाम से ही दी गयी हैं, जैसे नाइजीरिया की लोक कथाऐं, घाना की लोक कथाऐं, इथियोपिया की लोक कथाऐं, दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाऐं, ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं।

ख़रगोश, कछुए और अनन्सी मकड़े का अफ्रीका की लोक कथाओं में विशेष स्थान है सो उनकी लोक कथाऐं अलग से दी गयी हैं।

इस पुस्तक में अफ्रीका के इथियोपिया देश की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा जानने वालों के लिये हिन्दी में प्रस्तुत की जा रही हैं।[1] इथियोपिया देश की दो ख़ासियत हैं – एक तो यह कि इस देश पर किसी पश्चिमी सत्ता ने कभी राज नहीं किया सिवाय इटली देश के जिसने वहॉ केवल पॉच साल राज किया। दूसरे पूरे अफ्रीका में यही एक देश है जिसकी अपनी लिपि है। अफ्रीका के बाकी सारे देश अपनी भाषा लिखने के लिए रोमन लिपि का इस्तेमाल करते हैं। इस देश को "लैंड औफ थरटीन मन्थ्स औफ सनशाइन"[2] भी कहते हैं क्योंकि यहॉ के साल में **13** महीने होते हैं, **12** नहीं – **30–30** दिन के **12** महीने और **5–6** दिन का **13**वॉ महीना।

इथियोपिया की लोक कथाओं का पहला संकलन "इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**" हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं। अब यह प्रस्तुत है इथियोपिया की लोक कथाओं का दूसरा संकलन – "इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**"।

आशा है कि ये लोक कथाऐं इथियोपिया के जीवन की एक झलक प्रस्तुत करने में सहायक होंगी।

---

[1] These folktales have been taken from a work of a professor Shlomo who wrote them down by hearing them from his students.

[2] Land of Thirteen Months of Sunshine

1 धन के बच्चे[3]

एक बार एक आदमी ने दूसरे आदमी को कुछ पैसे छह महीने के लिये ब्याज पर उधार दिये। उधार लेने वाले ने उन पैसों को ऐसा का ऐसा ही उठा कर रख दिया।

जब छह महीने बीत गये तो उधार देने वाले ने खुशी से भर कर पूछा — "भाई, तुम मेरे पैसे कब वापस करोगे?"

यह सुन कर उधार लेने वाला अन्दर गया और पैसों की थैली खोल कर उसके सारे के सारे पैसे उसको गिन कर दे दिये।

उधार देने वाले ने पूछा — "भाई, जो इस धन से पैदा हुआ वह कहाँ है?" उसका मतलब था कि उस पैसे का ब्याज कहाँ है?

उधार लेने वाला डर गया। वह डरते डरते बोला — "खुदा गवाह है भाई, इससे तो कुछ भी पैदा नहीं हुआ।"

इस पर उधार देने वाले ने ज़ोर दे कर कहा — "मुझे इससे जो पैदा हुआ वह भी तो ला कर दो न, मुझे वह भी चाहिये।"

उधार लेने वाला हाथ जोड़ कर बोला — "तुमको मेरा विश्वास नहीं होता तो आओ मेरे साथ। मैं तुमको वह जगह दिखाता हूँ जहाँ मैंने ये पैसे रखे थे।"

[3] Children of Money – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

ऐसा कह कर वह उस आदमी को वहाँ ले गया जहाँ उसने वह थैली रखी थी और उसको वह जगह दिखाते हुए बोला — "देखो यह रही वह जगह जहाँ मैंने तुम्हारी दी हुई पैसों की थैली रखी थी।

और वह थैली मैंने ऐसी की ऐसी ही तुमको तुम्हारे सामने वापस कर दी है। मैं कसम खा कर कहता हूँ कि तुम्हारे इन पैसों में से कुछ भी पैदा नहीं हुआ है।"

उधार देने वाला यह सुन कर अपना पैसा वापस ले कर अपना सिर पीटता हुआ अपने घर वापस चला गया।

2 करामाती भाले[4]

बहुत समय पुरानी बात है कि एक बार इथियोपिया में एक बहुत ही ताकतवर आदमी रहता था। वह भाला बहुत अच्छा फेंकता था।

उसका निशाना अचूक था और वह जहॉ भी भाला फेंकना चाहता था उसका भाला भी वहीं जा कर लगता था। सब लोगों को उसकी यह होशियारी देख कर बहुत अचरज होता था।

पर उसके इस अचूक निशाने से नुकसान भी कई थे इसलिये उसके रिश्तेदार तथा गॉव के लोग उससे बहुत दुखी थे। "तुम इस धन्धे को छोड़ते क्यों नहीं?" "तुम ऐसा क्यों करते हो?" आदि आदि सवाल उससे पूछे जाते पर वह कहता "मैं मजबूर हूॅ यह मेरे हाथ में नहीं है।"

पर वह मजबूर क्यों था और वह उसको क्यों नहीं छोड़ सकता था यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था। जब किसी को कुछ नहीं सूझा तो एक दिन सबने मिल कर निश्चय किया कि उसकी यह आदत छुड़ायी जाये, पर कैसे? इस बारे में वे किसी नतीजे पर नहीं पहुॅच पाये।

[4] Magical Spears – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

वह आदमी गॉव वालों को चिन्ता में देख कर खुद भी बहुत दुखी था सो उसने भी एक निश्चय किया। एक दिन उसने अपने सभी गॉव वालों को बुलाया और बोला — "मैं अपनी मरजी से किसी को नहीं मारता यह तो मेरी और उस मरने वाले की तकदीर है।

अगर आप सब लोग इस बात से इतने दुखी हैं कि मैं ऐसा क्यों करता हूँ तो मैं ऐसा करता हूँ कि अभी आपके सामने ही मैं अपनी झोंपड़ी में से ये सारे भाले निकाल कर फेंक देता हूँ और मैं फिर कभी भाला नहीं फेंकूँगा।"

ऐसा कह कर वह अपनी झोंपड़ी में गया और सबके सामने अपने सारे भाले ला कर बाहर फेंक दिये और उन भालों से बोला — "ओ भालों, आज मैं तुम सबको बाहर फेंकता हूँ। तुम मेरे हाथ से चले जाओ और मेरी नजरों से दूर हो जाओ।"

इत्तफाक से वहीं उसकी झोंपड़ी की चहारदीवारी के बाहर ही एक चोर खड़ा था जो उस आदमी के घर में चोरी करने के इरादे से आया था। जब उस आदमी ने अपने भाले अपनी झोंपड़ी से बाहर फेंके तो वे सारे के सारे भाले उसके शरीर में जा लगे और वह मर गया।

अगले दिन जब उस आदमी ने चोर की लाश देखी तो गॉव वालों को बुलाया और कहा — "देखिये, ये वही भाले हैं जिनको मैंने कल आपके सामने अपनी झोंपड़ी से बाहर फेंका था और यह

आदमी बिना मेरे मारे ही मेरे भालों से मर गया है। अब आप ही बताइये कि मैं क्या करूँ।"

ऐसा कह कर उसने उस चोर की लाश उनको दिखायी तो गॉव के सभी लोग आश्चर्य में डूब गये।

गॉव वालों ने यह सब देख कर उससे कहा — "बेटा, तुम ठीक कहते थे। ऐसा लगता है कि यह तो तुमको वरदान है। अब हम इसमें कुछ नहीं कर सकते। तुम अपने भाले अपने घर ले जाओ और सुख से रहो।" और वे सब अपने अपने घर चले गये।

वह आदमी भी अपने भाले अपने घर ले आया। इस घटना के बाद फिर कभी किसी ने उससे भालों के बारे में कोई शिकायत नहीं की।

3 एक आदमी ने चोरी करना सीखा[5]

एक जगह दो आदमी रहते थे – उनमें से एक तो बहुत बड़ा चोर था, वह चोरी करने में बहुत होशियार था, और दूसरा एक किसान था, उसे चोरी करना बिल्कुल भी नहीं आता था। वह केवल खेती करके ही अपना पेट पालता था।

एक बार उसने देखा कि केवल खेती से उसका गुजारा नहीं हो पाता था और चोर के पास तो हमेशा ही खूब सारा पैसा दिखायी देता था। यह देख कर उसने सोचा कि चोर के पास चल कर उससे चोरी के बारे में ही कुछ सीखा जाये।

ऐसा सोच कर वह चोर के पास पहुँचा और उससे बोला — "चोर भाई, मेरा खेती में गुजारा नहीं होता मैं भी चोर बनना चाहता हूँ। बताओ मैं चोर कैसे बनूँ?"

चोर बोला — 'किसी के घर जा कर सेंध लगाओ। और देखो यह काम चुपचाप करना और जल्दी करना क्योंकि अगर घर वाला जाग गया तो वह तुम्हें अपने भाले से मार देगा।"

यह सुन कर किसान चला गया। उसने सोचा कि असल की चोरी करने से पहले मुझे कहीं पर अपना हाथ साफ कर लेना चाहिये।

[5] A Man Learnt Stealing – a folktale of Hadiya tribe of Ethiopia, Eastern Africa

यह सोच कर वह जंगल में लगे एक अंजीर के पेड़ के पास पहुँचा और उसकी जड़ खोदने लगा। जब वह उस पेड़ की जड़ खोद रहा था तो उसकी नंगी पीठ पर ओस की एक बूँद आ गिरी।

किसान तो मग्न हो कर सेंध लगा रहा था। उसे इस बात का ध्यान ही नहीं था कि अभी तो वह केवल अभ्यास के लिये ही सेंध लगा रहा था और केवल एक पेड़ की जड़ ही खोद रहा है सो ओस की बूँद पीठ पर पड़ते ही उसके दिमाग में आया कि घर वाला जाग गया है और उसने उसको अपने भाले से मारा है।

बस वह चिल्लाता हुआ घर भागा कि "उसने मुझे अपने भाले से मार डाला रे। उसने मुझे अपने भाले से मार डाला रे।" घर आ कर वह बहुत दुखी हुआ कि पहली ही कोशिश में ही वह नाकामयाब हो गया था।

वह फिर चोर के पास पहुँचा और बोला — "तुमने पहले जो कुछ भी मुझे बताया था वह सब गलत था। अबकी बार तुम मुझे फिर से सब कुछ ठीक से बताओ।"

चोर हँस कर बोला — "किसान भाई, पहले भी मैंने तुमको जो कुछ बताया था वह सब ठीक ही बताया था पर इस बार मैं तुमको चोरी का एक छोटा रास्ता बताता हूँ।

तुम चारों तरफ देखभाल कर जाना, न तो चिल्लाना और न बोलना और किसी के जानवरों के झुंड में छिप कर जाना।"

अबकी बार किसान कोई गलती नहीं करना चाहता था इसलिये चोर की बातों को ध्यान से अपने दिमाग में रख कर वह घास के मैदान में चर रहे जानवरों के झुंड में जा कर छिप गया।

जब जानवरों का मालिक उन जानवरों को हॉक कर अपने घर की तरफ ले चला तो छिपे छिपे वह भी उस मालिक के घर तक पहुँच गया।

वहॉ पहुँच कर वह ज़ोर से बोला — "तुम चारों तरफ देखभाल कर जाना, न तो चिल्लाना और न बोलना और जानवरों के झुंड में छिप कर जाना।"

बस फिर क्या था किसान जैसे ही यह बोला जानवरों के मालिक ने उसको देख लिया और उसको बहुत मारा। किसान ने फिर कभी चोरी का नाम नहीं लिया।

4 चोर और कुरसी[6]

कुछ समय पुरानी बात है कि इथियोपिया के डेसी शहर[7] में एक चोर रहता था। यह चोर अपने काम में बहुत चतुर था। उसने अपनी चतुराई से अब तक बहुत सारी चीज़ें चुरा लीं थीं, जैसे किताबें, घोड़े, कपड़े, खाना आदि।

उस चोर में एक खूबी थी कि वह जो भी चाहता था चुरा लेता था कोई उसको पकड़ नहीं सकता था। उसकी चोरी की एक कहानी बहुत मशहूर है, आज हम तुम्हें वही कहानी सुनाते हैं।

एक दिन यह चोर एक कैफे में गया। वहॉ वह आम लोगों की तरह मेज पर नहीं बैठा। वह उस कमरे में चारों तरफ घूमने लगा। उसने वहॉ दीवारों पर लगी तस्वीरों की तरफ देखा, उसने अलमारी में रखी बोतलों की तरफ देखा, उसने अपने चारों तरफ बैठे आदमियों की तरफ देखा।

फिर इधर उधर देख कर उस चोर ने एक कुरसी उठायी और उसे लिये लिये दरवाजे की तरफ बढ़ चला। वह दरवाजे के बाहर निकला। उसने सड़क पार की। सड़क पार करने के बाद उसने वह कुरसी अपनी कमर पर रखी और धीरे धीरे सामने वाले मैदान की तरफ चल दिया।

---

[6] A Thief and a Chair – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

[7] Dessie is a city of Ethiopia

पहले तो कैफे का वेटर उसको देखता रहा। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह आदमी कर क्या रहा है पर बाहर जाने के कुछ समय बाद तक भी जब वह कैफे के अन्दर नहीं लौटा तो वह कुछ घबराया।

वह कैफे के बाहर की तरफ भागा और चोर को इधर उधर देखने की कोशिश की तो वह उसे दिखायी दे गया। वह बड़े आराम से कुरसी उठाये हुए सामने वाला मैदान पार कर रहा था।

वह वहीं से चिल्लाया — "रुक जाओ, यह कुरसी वापस लाओ। यह कैफे की कुरसी है।"

चोर ने उसकी आवाज सुनी तो वह रुक गया। वह डरा नहीं, वह जानता था कि उसको क्या करना है। उसने वह कुरसी आराम से जमीन पर रख दी और उस पर आराम से बैठ गया।

जब वेटर ने उसको मैदान में कुरसी पर बैठे देख लिया तो उसकी जान में जान आयी। उसने सोचा कि यह अच्छा हुआ वह बैठ गया। अब वह कैफे की कुरसी आसानी से वापस ले कर आ सकता है।

ऐसा सोच कर वह आगे बढ़ता रहा। जब वेटर चोर के काफी पास पहुँच गया तो चोर ने वेटर को ऐसे आवाज लगायी जैसे वह कैफे में बैठा हो — "वेटर, इधर आओ।"

वेटर तुरन्त बोला — "साब, क्या चाहिये?"

चोर बोला — "एक प्याला कौफी।"

वेटर ने पूछा — "चीनी वाली या बिना चीनी वाली?"

चोर बोला — "चीनी वाली।"

वेटर तुरन्त ही चोर से आर्डर ले कर उलटे पैरों वापस कैफे की तरफ लौट पड़ा चोर ग्राहक के लिये चीनी वाली कौफी लाने। उधर वेटर के जाते ही चोर ने कुरसी उठायी और अपने रास्ते चल दिया।

है न मजेदार कहानी? नहीं नहीं, यह कहानी नहीं है यह तो सच्ची घटना है।

5 चालाक चोर[8]

यह इथियोपिया के दो चोरों की एक बहुत ही पुरानी कहानी है।

एक बार जब गायों को अन्दर रखने का समय आया तो एक चोर उन गायों के बीच में छिप गया और दूसरा उन गायों के मालिक के घर में शाम से ही छिप कर बैठ गया ताकि वह उसके घर में चोरी कर सके।

गायों का मालिक एक होशियार आदमी था। वह सोने से पहले हमेशा ही अपनी गायों की जॉच कर लेता था। सो उस रात भी सोने से पहले वह अपनी गायों की जॉच करने गया।

जैसे ही उसने अपनी मशाल की रोशनी गायों की जॉच के लिये उन पर फेंकी तो उसको वह चोर उन गायों के झुंड मे छिपा हुआ दिखायी दे गया।

पर गायों का मालिक बोला कुछ भी नहीं और घर का दरवाजा ठीक से बन्द करके सोने चला गया। चोर को भी पता चल गया कि गायों के मालिक ने उसे देख लिया है।

उसका साथी चोर बाहर उसका इन्तजार कर रहा था। अन्दर वाला चोर बहुत घबराया पर उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे।

[8] Cunning Thief – a folktale from Hadiya Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

उधर उसके साथी चोर को कुछ गड़बड़ दिखायी दी तो वह दीवार के सहारे सहारे उस जगह तक आया जहाँ अन्दर उसका साथी चोर छिपा बैठा था और उससे पूछा — "भाई, क्या हाल हैं?"

अन्दर वाले चोर ने रुआँसा सा हो कर कहा — "भाई, हाल बुरे हैं। गायों के मालिक ने मुझे देख लिया है और मैं अब मारा जाऊँगा। बाहर निकलने का भी अब कोई रास्ता नहीं है।"

साथी चोर ने उसे तसल्ली देते हुए कहा — "देखो, थोड़ा रुको, तसल्ली रखो और बोलो नहीं। मैं तुमको अभी बाहर निकालता हूँ।"

अन्दर वाले चोर ने पूछा — "कैसे निकालोगे भाई?"

साथी चोर बोला — "देखो मैं छत पर चढ़ता हूँ और इस मकान के बीच वाले खम्भे पर बैठ कर चिल्लाऊँगा "हे भगवान, तुम्हारी जय हो। तुम्हीं मुझे अन्दर लाये और तुम्हीं मुझे बाहर निकाल रहे हो। तुम्हारी जय हो।"

ऐसा कह कर मैं नीचे कूद जाऊँगा। गायों का मालिक मेरे कूदने की आवाज सुन कर बाहर आयेगा, मैं भागूँगा, वह मेरा पीछा करेगा और बस, इतनी देर में तुम बाहर निकल आना।"

अन्दर वाले चोर ने कहा — "तरकीब तो अच्छी है। मैं ऐसा ही करता हूँ।"

सो बाहर वाला चोर उस मकान की छत पर चढ़ गया और बीच वाले खम्भे के पास बैठ कर ज़ोर से चिल्लाया — "हे भगवान, तुम्हारी जय हो। तुम्हीं सबकी रक्षा करने वाले हो। तुम्हीं मुझे अन्दर लाये और तुम्हीं मुझे बाहर निकाल रहे हो। तुम्हारी जय हो।"

ऐसा कह कर वह अपनी योजना के अनुसार नीचे कूद गया।

कूदने की आवाज सुन कर गायों का मालिक बाहर निकला और यह सोच कर कि चोर भाग निकला है वह उस आदमी को पकड़ने दौड़ा।

बाहर वाला चोर भागने में बहुत तेज़ था सो वह तो पल भर में ही यह जा और वह जा।

उधर दरवाजा खुला देख कर और मौका पा कर अन्दर वाला चोर भी बाहर निकल आया और बच कर भाग गया। गायों के मालिक को किसी के भागने की आवाज तो सुनायी दी पर कोई आदमी दिखायी नहीं दिया।

कुछ पल तो उसने उसका पीछा करने की कोशिश की परन्तु उसे जल्दी ही पता चल गया कि उन पैरों की आवाज का पीछा करना बेकार था।

फिर उसको अपने घर के दरवाजा खुला होने का भी डर था सो वह उलटे पैरों घर लौट आया। उसने अन्दर झॉक कर देखा तो अन्दर वाला चोर तो भाग चुका था।

उसने बहुत सोचा पर उसकी समझ में कुछ न आया कि यह सब कैसे हुआ। वह अन्दर जा कर घर का दरवाजा बन्द करके फिर से सो गया।

उधर वह चोर आजाद हो कर अपने साथी से जा मिला। इस तरह एक चोर ने अपने साथी चोर की मदद की।

6 एक डाकू और तीन चोर[9]

एक बार एक बहादुर डाकू अपने कंधे पर बन्दूक रखे घूम रहा था कि उसे दूर से आते तीन चोर दिखायी दिये। चोरों ने भी उस डाकू को देख लिया था सो वे छिप गये।

डाकू ने सीटी बजायी तो उन्होंने भी सीटी बजायी। इससे डाकू ने समझा कि वे उसी के साथी हैं सो वह उनके पास चला गया पर वहॉ जा कर देखा तो वे तो चोर थे।

जल्दी ही दोनों में गोलियॉ चलने लगीं परन्तु कोई चोर गोलियॉ चलाने में उस डाकू को नहीं पछाड़ सकता था। चोरों को अपनी हार देख कर बड़ा गुस्सा आया।

उस डाकू को गिरफ्तार करने और मारने की उनको एक तरकीब सूझी। वे उससे बोले — "चलो, आज एक अमीर अरब को लूटने चलते हैं।" डाकू राजी हो गया।

रात होने पर वे चारों उस धनी अरब के घर पहुॅचे। चोर अभी यह सोच ही रहे थे कि वे क्या करें कि इतने में डाकू ने एक छलॉग लगायी और उस अरब के घर की पहली बाड़ पार कर अन्दर घुस कर उसके घर का दरवाजा खोल दिया। चोर दरवाजे से अन्दर आ गये तो डाकू ने दरवाजा बन्द कर दिया।

[9] A Robber and Three Thieves – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

इसके बाद डाकू फिर दूसरी बाड़ कूदा और दूसरा दरवाजा खोल कर चोरों को अन्दर घुसाया और फिर दूसरा दरवाजा भी बन्द कर दिया।

अब तक चोर बहुत डर गये थे। उन्होंने डाकू से पूछा — "भाई, तुमने ये दरवाजे क्यों बन्द कर दिये?"

परन्तु डाकू ने उनको कोई जवाब नहीं दिया और वह तीसरी बाड़ भी कूद गया। उसने तीसरा दरवाजा खोला, तीनों को फिर से अन्दर घुसाया और पहले की तरह यह तीसरा दरवाजा भी बन्द कर दिया।

रात काफी जा चुकी थी, सभी सो रहे थे। झोंपड़ी की फूस की छत को आसानी से हटा दिया गया। चोरों ने डाकू से कहा कि वहाँ जो बेचने के लिये चीजें रखी हुई थीं उनको वह अन्दर कूद कर बाहर निकाल कर उनको दे दे। सो उस डाकू ने वहाँ रखीं सारी चीज़ें उन तीनों चोरों को निकाल कर दे दीं।

इसके बाद उसने चोरों से कहा कि अब काफी हो गया है अब तुम दरवाजा खोलो तो मैं बाहर निकलूँ। पर चोर "बच्चू, अब तुम बाहर नहीं निकल पाओगे।" ऐसा कह कर सारा सामान बाड़े के बाहर ले जाने लगे।

पहले तो वह डाकू वहाँ से अपने आप ही बाहर निकलने की कोशिश करता रहा, फिर जब न निकल पाया तो चिल्लाया — "वह

आकाश से तूफान की तरह आता है, धरती से भूचाल की तरह निकलता है, जल्दी करो कौफी बनाओ, प्रार्थना करो, घर में धूप जलाओ, पड़ोसियों को बुलाओ, दरवाजा खोलो, रोशनी जलाओ, मैं आ गया हूँ, अल्लाह का भेजा दूत।"

उसके ये शब्द सुन कर घर के मालिक की ऑख खुल गयी, वह चिल्लाया — "ओ मेरे अल्लाह, यह सब क्या है? तूने यहॉ क्या भेजा है?"

उसने अपने नौकरों को उठाया। नौकरों ने जैसे ही दरवाजा खोला तो डाकू तो भाग गया। ये सब आवाजें सुन कर कुत्ते भी जाग गये थे सो दरवाजा खुलते ही वे भी चोरों के पीछे भाग लिये।

एक चोर को तो उन्होंने पकड़ लिया और उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। दूसरा डर के मारे बचने के चक्कर में और अँधेरे में देख न पाने की वजह से एक गड्ढे में गिर गया। तीसरा भी एक कॉटे वाली झाड़ी में जा पड़ा।

डाकू ने बाहर आ कर देखा तो घर के बाहर बहुत सारा सामान पड़ा हुआ था। उसमें से उससे जितना सामान उठाया जा सका उतना उठाया और वह भी वहॉ से भाग गया।

सो दूसरे का बुरा चाहने वालों का यह हाल हुआ।

7 औरतों ने अपना बड़ापन कैसे खोया[10]

बहुत समय पुरानी बात है कि एक बार औरतों ने आपस में विचार किया कि यह क्या बात है कि हमेशा हम लोगों को ही आदमियों की आज्ञा माननी पड़ती है। कभी ऐसा भी तो हो जब वे लोग हमारी आज्ञा मानें।

ऐसा विचार कर उन्होंने आदमियों से कहा — "अब बहुत दिन हो गये हम लोगों को आपकी आज्ञा मानते हुए अब आप हमारा कहा मानिये।"

आदमियों ने कहा — "इससे पहले कि हम अपना बड़ापन तुम लोगों को दें हम आपस में सलाह कर लें।"

सब आदमियों ने मिल कर एक सभा की और आपस में यह निश्चय किया कि अगर औरतें अच्छी नेता बन कर यह साबित कर दें कि वे सब हालतों को ठीक से सँभाल सकती हैं तो हम उनको अपना बड़ापन दे देंगे।"

ऐसा निश्चय कर उन्होंने औरतों को बुलाया और अपना निश्चय उनको बताया और कहा — "तुम लोग यह बड़ापन ले लो और आज से हमारी नेता बन जाओ।" औरतें यह सुन कर बहुत खुश हुई।

[10] How Women Lost Their Greatness – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, East Africa

पुराने समय के लोग ख़ानाबदोशों की जिन्दगी बिताते थे और अपने जानवरों को लेकर इधर से उधर घूमते रहते थे। समूह में जो बड़ा आदमी होता था वही आज्ञा देता था और उसी की आज्ञा से समूह में सारा काम होता था।

अब यह बड़ापन औरतों के पास आ गया था इसलिये समूह का सारा काम अब उन्हीं की आज्ञा से होना था।

एक दिन उस समूह की बड़ी औरत ने यह निश्चय किया कि अब उस जगह से जाने का समय आ गया है सो वहाँ से चल कर कहीं और रहना चाहिये।

आदमी लोग तो सब तैयार हो गये परन्तु एक औरत बोली — "अभी अभी तो मैंने अपने सिर में मक्खन लगाया है।[11] अभी मैं अगर धूप में चली तो मेरे सिर का सारा मक्खन पिघल जायेगा और मेरे मुँह पर बह निकलेगा।

और फिर इतनी कड़ी धूप में हम अपने जानवर भी तो नहीं ले जा सकते।" ऐसा कह कर उसने जाने से मना कर दिया।

इस पर बड़ी औरत ने कहा — "अच्छा तो फिर हम शाम को चलेंगे जब धूप कम हो जायेगी।"

जब शाम को वे सब चलने के लिये तैयार हुए तो आदमी लोग तो सब फिर तैयार हो गये पर एक दूसरी औरत बोली — "अगर हम शाम को चलेंगे तो अँधेरे में हमको ठीक से दिखायी न देने की

[11] Ethiopian women rub butter in their hair.

वजह से हमारे पैरों को ठोकर लगेगी, काँटे भी चुभेंगे, इससे हम गिर भी सकते हैं और मर भी सकते हैं। इसलिये हम रात को कैसे जा सकते हैं।"

इस तरह वे लोग उस रात को भी नहीं जा सके। अगले दिन आदमियों ने कहा — "तुम लोग बड़े होने के लायक ही नहीं हो। तुमको तो आदमियों की ही आज्ञा माननी चाहिये।"

इस तरह औरतों ने अपना बड़ापन खो दिया और वे फिर से आदमियों की गुलाम हो गयीं जो वे आज तक हैं।

8 औरतें और बरतन[12]

इथियोपिया के एक बड़े शहर के पास एक औरत रहती थी जिसका नाम था अलमास[13]। एक दिन उसने बहुत सारी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उनको बाजार में बेचने के लिये चल दी।

उधर से उसकी एक दोस्त ऐस्टर[14] बाजार से तैफ़ खरीद कर लौट रही थी। तैफ़ एक तरह का अन्न होता है जो इथियोपिया और

अरब के दक्षिण पश्चिम हिस्से में बहुत उगता है और वहाँ बहुत खाया जाता है। वहाँ के लोग उसका दक्षिण भारत का दोसा सा बना कर खाते हैं जिसे वे लोग इन्जिरा कहते हैं।

दोनों दोस्त बहुत दिनों के बाद मिली थीं सो बहुत प्रेम से मिलीं। उन्होंने आपस में बहुत सारी बातें की, बाजार की, बच्चों की, अपने पतियों की और अपनी मेहनत की जो वे सुबह से शाम तक करती थीं।

अलमास ने ऐस्टर से कहा — "हम लोग हमेशा ही कितनी मेहनत करते हैं, बड़े बड़े गट्ठरों का बोझ उठाते हैं, बच्चों की देखभाल करते हैं फिर भी राजा ऊँचे ओहदे आदमियों को ही देता

[12] Women and Pot – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Eastern Africa
[13] Almaz – the name of an Ethiopian woman
[14] Aster – the name of an Ethiopian woman

है हम लोगों को नहीं। मैंने उसको कभी कोई ऊँचा ओहदा किसी औरत को देते नहीं देखा। ऐसा क्यों ऐस्टर?"

ऐस्टर बोली — "बहिन, यह तो तुम ठीक कहती हो। चलो हम लोग चल कर इस बारे में राजा से ही बात करते हैं कि वह ऐसा क्यों करता है।" और वे दोनों एक दिन राजा के महल में जा पहुँचीं।

वहाँ पहुँच कर दोनों ने राजा को घुटनों के बल बैठ कर सलाम किया और फिर अलमास बोली — "राजा साहब, हम आपसे एक सवाल पूछना चाहते हैं। मेहरबानी करके आप हमें यह बताइये कि आप ऊँचे ओहदे केवल आदमियों को ही क्यों देते हैं? और औरतों को हमेशा नीचे ओहदे ही क्यों मिलते हैं।

राजा बोला — "यह बात मैं तो तुम्हें नहीं बता सकता, पर रुको, मैं तुम लोगों को अपने मन्त्री के पास भेजता हूँ। वह तुम लोगों को बतायेगा कि ऐसा क्यों होता है।

ऐसा करो कि तुम यह बरतन मेरे मन्त्री के पास ले जाओ। इस बरतन में मेरे मन्त्री के नाम एक चिट्ठी है जिसमें मैंने तुम्हारे सवाल के बारे में लिख दिया है।

इस बरतन को तुम उसको दे देना। वह तुम्हारे सवाल का जवाब जरूर दे देगा। और हाँ एक बात

और, यह बरतन तुम अपने आप मत खोलना। बस ले जा कर उसको दे देना।"

दोनों औरतों ने पूछा — "क्या हम देख सकते हैं कि इस बरतन में क्या है?"

राजा बोला — "नहीं नहीं, यह काम तुम लोग किसी भी हाल में न करना।"

"ठीक है।" कह कर दोनों औरतों ने राजा का कहा मानने का वायदा किया और वह बरतन ले कर राजा के मन्त्री के पास चल दीं।

थोड़ी दूर जाने के बाद ही ऐस्टर बोली — "अलमास, मैं यह बरतन खोल कर देखना चाहती हूँ कि आखिर इस बरतन के अन्दर है क्या।"

अलमास बोली — "इच्छा तो मेरी भी यही है पर क्या करें राजा ने मना किया है।"

ऐस्टर बोली — "पर राजा को कैसे पता चलेगा कि हमने यह बरतन खोला है? हम इसमें से कुछ निकालेंगे थोड़े ही। बस देखेंगे कि इसमें क्या है और फिर इसे बन्द कर देंगे।"

सो दोनों एक जगह बैठ गयीं और उन्होंने वह बरतन खोल दिया। जैसे ही उन्होंने बरतन का ढकना उठाया, एक पीले रंग की चिड़िया

उसमें से निकल कर ऊपर आसमान में उड़ गयी और महल के अन्दर चली गयी।

अलमास और ऐस्टर दोनों डर गयीं पर अब तो कुछ हो नहीं सकता था।

उन्होंने उस बरतन के अन्दर झाँका तो उसमें एक कागज का टुकड़ा रखा था जिस पर लिखा था "क्योंकि औरतें हुकुम मानना नहीं जानतीं।"

अब उन दोनों औरतों की समझ में आया कि राजा औरतों को ऊँचे ओहदों पर क्यों नहीं रखता था।

9 एक औरत और एक शेर[15]

काफी समय पुरानी बात है कि इथियोपिया के एक शहर में फानाये[16] नाम की एक औरत रहती थी। वह बहुत दुखी रहती थी क्योंकि उसका पति उसको बिल्कुल भी प्यार नहीं करता था।

प्यार करना तो दूर वह उससे बोलता तक नहीं था। सुबह वह खाना ले कर अपने काम पर चला जाता और शाम को थका हारा घर आता तो खाना खा कर सो जाता।

एक दिन फानाये जब बहुत परेशान हो गयी तो वह एक अक्लमन्द आदमी के पास गयी और उसको अपना सब हाल कह सुनाया कि उसका पति उसको बिल्कुल प्यार नहीं करता था और उससे पूछा कि इसके लिये वह क्या करे।

उस अक्लमन्द आदमी ने उसकी बात ध्यान से सुनी और बोला — "अब जो मैं तुमको बात बताता हूँ उसे तुम ध्यान से सुनो और उसे जरूर करना। भगवान ने चाहा तो तुम्हारा पति तुमको जरूर ही प्यार करने लगेगा। परन्तु उस काम को करने से पहले मुझे शेर की पूँछ के कुछ बाल चाहिये।"

---

[15] A Woman and a Lion – a folktale from Jablawi Tribe of Ethiopia, Eastern Africa
[A similar story is told and heard in Liberia, West Africa too. It may be read in my book "PashchimI Africa Ki Lok Kathayen-1" book given under the title "Sher Ki Moonchh"]

[16] Fanaye – a name of an Ethiopian woman

फ़ानाये यह सुन कर चिन्ता में पड़ गयी पर वह फिर वहाँ से चली गयी। उसको बहुत चिन्ता हो रही थी कि शेर की पूँछ के बाल वह भला कहाँ से लायेगी। यह काम तो नामुमकिन सा दिखायी देता था।

पर अगर उसको अपने पति का प्यार पाना है तो उसे शेर की पूँछ के बाल तो कहीं न कहीं से लाने ही पड़ेंगे। वह इस काम में सफल हो या न हो पर वह कोशिश जरूर करेगी।

जिस शहर में वह रहती थी उस शहर के बाहर एक घना जंगल था और उस जंगल में शेर की एक गुफा थी। एक दिन फानाये ने थोड़ा सा माँस एक पोटली में बाँधा और उस शेर की गुफा की तरफ चल दी।

उसने वह माँस शेर की गुफा के बाहर रख दिया और उसके बाहर निकलने का इन्तजार करने लगी। शेर बाहर तो आया परन्तु जैसे ही उसने शेर को देखा तो वह डर गयी और वहाँ से भाग खड़ी हुई। वह शेर से बहुत ज़्यादा डर गयी थी।

अगले दिन वह कुछ और ज़्यादा माँस ले कर शेर की गुफा की तरफ चली। गुफा के पास पहुँच कर उसने वह माँस एक पत्थर पर रख दिया और वह खुद एक पेड़ के पीछे खड़ी हो गयी।

कुछ ही देर में शेर आया और माँस खाने लगा। वह शेर के पीछे से ही उसको माँस खाता देखती रही।

तीसरे दिन वह एक भेड़ ले कर आयी। उस दिन वह तब तक भेड़ के पास ही खड़ी रही जब तक शेर ने भेड़ को खाया।

चौथे दिन वह डरी भी नहीं और भागी भी नहीं, बल्कि उसने शेर को खुद अपने हाथों से मॉस खिलाया।

अब वह रोज शेर के लिये मॉस ले जाने लगी और वह और शेर दोनों आपस में अच्छे दोस्त बन गये। वह अब उस शेर को पास बिठा कर मॉस खिलाती।

एक दिन जब वह शेर मॉस खा रहा था तो उसने उसकी पूँछ में से थोड़े से बाल तोड़ लिये। फिर उसने उसको और ज़्यादा मॉस दिया और थोड़े से बाल और तोड़ लिये। शेर ने उसकी तरफ देखा भी नहीं।

फ़ानाये अब बहुत खुश थी कि उसको शेर की पूँछ के बाल मिल गये थे। अब वह अक्लमन्द आदमी उसको उसके पति का प्यार पाने की कोई न कोई तरकीब जरूर ही बता देगा।

वह शेर के बाल ले कर तुरन्त उस अक्लमन्द आदमी के घर आयी और वे शेर के बाल उतावली से उसके हाथ में देते हुए बोली — "ये रहे शेर की पूँछ के बाल। अब बताओ मैं क्या करूँ?"

वह अक्लमन्द आदमी शेर की पूँछ के बाल अपने हाथ में ले कर ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "कैसी अजीब बात है, तुम शेर जैसे खूँख्वार जानवर को अपना दोस्त बना कर तो उसकी पूँछ के बाल ला सकती हो पर अपने पति को अपना दोस्त बना कर उसका प्यार नहीं पा सकतीं।"

फ़ानाये यह सुन कर बहुत शरमिन्दा हुई। उसकी समझ में आ गया कि वह कहीं गलती पर थी। धीरे धीरे उसका अपने पति के साथ व्यवहार बदल गया और फिर उसका पति उसको खूब प्यार करने लगा।

10 सुनहरा घोड़ा[17]

इथियोपिया के पूर्वी हिस्से में एक चरवाहा रहता था। उसके पास थोड़ी सी जमीन थी, कुछ भेड़ें, कुछ बकरियाँ, कुछ गायें, कुछ बैल और एक घोड़ा और एक घोड़ी थी।

हर साल वसन्त में वह घोड़ी एक बच्चे को जन्म देती थी और वह चरवाहा कुछ महीने तक उसको अपने पास रख कर बड़ा करके उसे बेच दिया करता था। उस पैसे से वह अपने परिवार के लिये नये कपड़े बनवाया करता था।

फिर एक बार वसन्त आया और फिर एक बार उस घोड़ी ने एक बच्चे को जन्म दिया। पर इस बार का बच्चा उस घोड़ी के पहले के सभी बच्चों से अलग था। इस बच्चे के बाल सुनहरे थे और जैसे जैसे वह बच्चा बड़ा होता गया वह बच्चा और भी ज़्यादा सुन्दर होता गया।

कुछ महीने बाद एक व्यापारी हर साल की तरह उस बच्चे को खरीदने के लिये उसके पास आया।

चरवाहे ने पहले तो बच्चे की तरफ देखा और फिर व्यापारी की तरफ, और बोला — "यह बच्चा बहुत सुन्दर है। मैं अभी इसे आपको नहीं बेचूँगा। मैं इसको थोड़े दिन और अपने पास रखना चाहता हूँ।"

[17] A Golden Horse - a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

व्यापारी चला गया और घोड़े का बच्चा वहीं खाता खेलता बड़ा होता रहा। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया उसका खाना भी बढ़ता गया।

हालॉकि चरवाहा उसको बेचना नहीं चाहता था परन्तु वह उसको अपने पास रख भी नहीं सकता था क्योंकि वह बहुत गरीब था और उसके खाने के खरचे का बोझ नहीं उठा सकता था।

उसने सोचा कि बारिश खत्म हो जाने के बाद जब जमींदार वहॉ आयेगा तो वह उस बच्चे को उस जमींदार को दे देगा।

कुछ हफ्ते बाद बारिश का मौसम खत्म हो गया और जमींदार गॉव में आया। गॉव के सभी लोग उससे मिलने गये। एक बड़ी दावत दी गयी उसके आने की खुशी में। उस दावत में गवैयों को भी बुलाया गया था। दावत खत्म होने के बाद सभी अपने अपने घर चले गये।

अगले दिन वह चरवाहा उस जमींदार के घर गया और बोला — "सरकार, आपके लिये मेरे पास एक भेंट है।"

जमींदार बोला — "अच्छा, कहॉ है वह भेंट?" जमींदार ने चारों तरफ अपनी निगाह दौड़ायी पर उसको कोई भेंट दिखायी नहीं दी।

इतने में चरवाहे का बेटा बाहर से वह सुनहरा घोड़ा ले आया। घोड़ा सचमुच ही बहुत सुन्दर था। जमींदार उस घोड़े को देख कर बहुत खुश हुआ। उसने सभी लोगों को वह घोड़ा दिखलाया। सभी

ने उस घोड़े की बहुत तारीफ की क्योंकि उन लोगों ने ऐसा घोड़ा पहले कभी नहीं देखा था।

जब सब लोग उसका घोड़ा देख रहे थे तो चरवाहा अपने बेटे को ले कर दुखी मन से वहाँ से बाहर चला गया और फिर अपने घर चला आया।

उधर जब उस घोड़े की काफी तारीफ हो रही थी तो जमींदार ने पूछा — "अरे वह आदमी कहाँ है जो इस घोड़े को लाया था? मैं उसे इतना सुन्दर घोड़ा देने के लिये कुछ इनाम देना चाहता हूँ।"

यह सुन कर जमींदार के नौकरों ने अन्दर बाहर चारों तरफ देखा परन्तु चरवाहे और उसके बेटे का तो कहीं पता ही नहीं था। वे दूर दूर तक उनको ढूँढने के लिये भी गये पर वह चरवाहा और उसका बेटा उनको कहीं दिखायी नहीं दिये।

जमींदार एक मिनट तक तो चुप रहा फिर बोला — "देखो, वह गरीब आदमी मुझे इतनी कीमती भेंट देगया और बदले में कुछ भी नहीं ले गया, इसे कहते हैं उदारता।"

11 सोना उगलने वाला गधा[18]

बच्चो इथियोपिया में एक प्रान्त है सिडामो[19]। वहॉ की जमीन बहुत उपजाऊ है। वहॉ की मिट्टी काली है और वहॉ हमेशा हरियाली छायी रहती है।

कहते हैं कि एक बार सिडामो का एक आदमी बाजार से एक बोरा अनाज खरीद कर लाया। उसको मालूम नहीं था कि उसके बोरे में एक छोटा सा छेद भी था सो धीरे धीरे करके उसके बोरे का करीब करीब सारा अनाज रास्ते ही में बिखर गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसने दुखी मन से अपना वह बचा हुआ अनाज अपने अनाज भंडार में रख दिया।

पर जब वह अगले दिन सुबह जागा तो क्या देखता है कि पिछले दिन जहॉ जहॉ अनाज बिखरा था वहॉ वहॉ वह अनाज उग आया है और वह इतना ऊँचा बढ़ गया है कि अब उसे कहीं कोई रास्ता नहीं सुझाई पड़ रहा है।

वह बेचारा आदमी उसी उगे अनाज के जंगल में बाहर जाने का रास्ता ढूँढते ढूँढते मर गया।

तो ऐसा है वह सिडामो प्रान्त और ऐसे हैं वहॉ के लोग। वहॉ की जमीन तो इतनी ज्यादा उपजाऊ है पर लोग बहुत आलसी हैं।

---

[18] A Gold Spitting Donkey - an Amhara folktale from Ethiopia, Eastern Africa

[19] Sidamo is a Province of Ethiopia.

उसी प्रान्त के पड़ोस के एक शहर में एक व्यापारी रहता था। उसने इस जगह के बारे में ऐसी कहानी सुनी तो उसने सोचा कि वह वहॉ जा कर अपनी दूकान लगायेगा।

वह वहॉ आया, उसने अपनी दूकान लगायी और कुछ ही समय में बहुत अमीर हो गया क्योंकि वहॉ के लोग अनाज उगाने की बजाय उसे बाजार में खरीदना ज़्यादा पसन्द करते थे।

पर वह व्यापारी इतना ज़्यादा पैसा होने के बावजूद भी खुश नहीं था क्योंकि वह देखता था कि इतनी सुन्दर उपजाऊ जमीन इन आलसी लोगों की वजह से बेकार हो रही है।

इसके अलावा उसने यह भी देखा कि वह अच्छी या बुरी जैसी भी चीज़ अपनी दूकान पर बेचने के लिये लाता वह बिना किसी परेशानी के बिक जाती।

इस बात से उसको अपने व्यापार में कोई मजा नहीं आ रहा था। कई बार उसने वहॉ के लोगों को समझाया कि तुम लोग ऐसा क्यों करते हो परन्तु उनकी समझ में कुछ आता ही नहीं था।

जब तक वह जवान था व्यापार के सिलसिले में वह इधर उधर दूसरे देशों में जाता भी रहता था परन्तु बूढ़ा होने पर तो उसको वहीं रहना पड़ता, उन्हीं बेवकूफ और आलसियों के बीच।

एक दिन उसको उन आलसी लोगों को सबक सिखाने की एक तरकीब सूझी। उसने अपना एक बहुत ही बूढ़ा और बीमार गधा लिया, उसके मुँह

में उसने सोने के तीन सिक्के रखे और उसको बाजार में बेचने के लिये ले आया।

उसने कहना शुरू किया — "आओ आओ, ओ सिडामो के लोगों यहाँ आओ और देखो मैं तुमको एक तमाशा दिखाता हूँ।

तुम जानते ही हो कि मैं कितना बूढ़ा हूँ और अमीर भी। मेरे मरने के दिन अब करीब आ रहे हैं और इतना धन मैं अपने साथ तो ले जा नहीं सकता इसलिये मैं तुम लोगों को बताना चाहता हूँ कि मैं इतना अमीर कैसे बना।

तुम लोगों को यह भी मालूम है कि मैंने कभी हल नहीं चलाया, कभी फावड़ा नहीं चलाया पर फिर भी मैं अमीर हूँ क्योंकि मेरे पास यह गधा है, सोना उगलने वाला गधा।"

यह सुन कर तो उस व्यापारी के चारों तरफ भीड़ लग गयी। व्यापारी फिर बोला — "देखो लोगों ध्यान से देखो। अगर मुझे सोने की जरूरत होती है तो बस मैं इस गधे की पूँछ ऊपर नीचे हिलाता हूँ और यह गधा मुझे सोने के सिक्के दे देता है।"

यह कह कर उस व्यापारी ने लोगों के सामने ही उस गधे की पूँछ को ऊपर नीचे किया और अपना हाथ गधे के मुँह पर रख दिया। देखते देखते गधे ने सोने का एक चमचमाता सिक्का व्यापारी के हाथ पर उगल दिया। सारे लोग यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

तभी व्यापारी ने कहा — "अगर तुम लोग यह अपने आप करके देखना चाहो तो करके देख सकते हो।"

कई बेवकूफ लोग गधे की पूँछ की तरफ दौड़े पर एक अक्लमन्द आदमी गधे के मुँह की तरफ बढ़ा और अपना हाथ उसके मुँह पर लगा दिया। बेवकूफों ने गधे की पूँछ हिलायी और गधे ने तुरन्त ही उस अक्लमन्द आदमी के हाथ पर वैसा ही सोने का एक चमचमाता सिक्का उगल दिया।

एक अक्लमन्द आदमी चिल्लाया — "आश्चर्य, इस जानवर को तो मैं खरीदूँगा।"

व्यापारी बोला — "जनाब इतनी जल्दी नहीं। मैं इस गधे की बोली लगाता हूँ और फिर जो भी इसके सबसे ज़्यादा दाम लगायेगा यह गधा मैं उसी को बेचूँगा। यह तो व्यापार है न?"

व्यापारी ने बोली लगायी। उस अक्लमन्द जमींदार तथा उसके एक अमीर भाई ने अपनी सारी सम्पत्ति के बदले में उस गधे को सबसे ज़्यादा दाम लगा कर खरीद लिया।

अब व्यापारी तमाशा देखने के लिये दूर खड़ा हो गया। जमींदार अपने भाई से बोला — "पहले हम इस गधे से इसके लिये दी गयी कीमत तो वसूल कर लें।"

जमींदार के भाई ने उसकी पूँछ हिलायी और गधे के मुँह से तीसरा और आखिरी सोने का सिक्का भी जमींदार की हथेली पर आ

गिरा। वह सिक्का उसने भीड़ में खड़ी एक गरीब औरत को दे दिया।

जमींदार बोला — "भाई, अब मैं यह खाली थैला इस गधे के मुँह के आगे लगाता हूँ और तुम उधर से गधे की पूँछ हिलाओ।" उन दोनों ने वैसा ही किया परन्तु काफी देर तक पूँछ हिलाने के बाद भी सोने का एक भी सिक्का गधे के मुँह से बाहर नहीं आया।

वहाँ खड़े सभी लोगों ने अपनी अपनी कोशिश की परन्तु कोई भी गधे के मुँह से सोने का सिक्का बाहर नहीं निकाल पाया। यह सब देख कर दूर खड़ा व्यापारी हँस पड़ा।

व्यापारी की इस हँसी पर जमींदार बहुत चिल्लाया। भीड़ इकट्ठी हो गयी। जमींदार बोला — "तुमने हमें धोखा दिया है। कोई छोटा मोटा धोखा होता तो हम सह लेते परन्तु यह तो बहुत बड़ा धोखा है।"

व्यापारी बोला — "मैंने तुमको कोई धोखा नहीं दिया। जैसे हर चीज़ में एक भेद छिपा होता है वैसे ही इस गधे में भी एक भेद छिपा हुआ है। अगर तुम इस भेद को जान जाओगे तो यह गधा फिर से सोना उगलेगा।"

जमींदार गिड़गिड़ाया — "हमें वह भेद जल्दी बताओ आखिर हमने यह गधा पैसे दे कर खरीदा है।"

व्यापारी मुस्कुरा कर बोला — "तुम लोगों ने केवल गधा खरीदा है वह भेद नहीं। तुम लोगों को वह भेद जानने के लिये **100** सोने के सिक्के और देने पड़ेंगे।"

जमींदार दुखी हो कर बोला — "पर अब हमारे पास और सोना नहीं है। हमने तो अपना सारा सोना तुमको दे दिया। तुम हमको वह भेद बता दो तो हम वे **100** सोने के सिक्के तुमको गधे से उगलवा कर दे देंगे।"

व्यापारी बोला — "यह नहीं हो सकता। सिक्के तो तुमको पहले ही देने पड़ेंगे।"

इस पर दूसरे दो और अमीर आदमियों ने जमींदार और उसके भाई की सहायता करने का वायदा किया, इस शर्त पर कि वे भेद जानने के बाद गधे से उगले सोने को उनसे बॉट लेंगे।

व्यापारी सोना लेने के बाद बोला — "वह भेद कोई खास तो नहीं है, सीधा सा है। गधे से सोना उगलवाने के लिये गधे के मुँह में सोना रखना पड़ता है। देखो यह कैसे होता है।"

ऐसा कह कर उसने गधे के मुँह में दो सोने के सिक्के रख दिये। उसके नौकर ने गधे की पूँछ हिलायी और गधे ने वे दोनों सिक्के एक के बाद एक व्यापारी के हाथ पर उगल दिये। व्यापारी ने वे सिक्के अपनी जेब में डाले और अपनी दूकान की तरफ चला गया।

आज वह बहुत खुश था। वहीं से उसने लोगों से कहा — "अब तुम कोशिश करके देखो। भेद यही है कि अगर तुम सोना उसके मुँह में रखोगे तो वह सोना उगलेगा और जितना रखोगे उतना ही उगलेगा।"

अब जमींदार ने ऐसा ही किया तो गधे ने उसके रखे सिक्के ऐसे के ऐसे उगल दिये। अब व्यापारी ने पूछा — "अब बताओ, मैंने तुमको कोई धोखा तो नहीं दिया? तुमसे कोई झूठ तो नहीं बोला?"

जमींदार बोला — "बिल्कुल नहीं।" यह सुन कर व्यापारी ने अपनी दूकान बढ़ायी और अपने घर चला गया।

पर अगली सुबह वह भागा भागा बाजार आया क्योंकि उसे पता था कि गुस्से में भरी भीड़ उसका इन्तजार कर रही होगी।

वह सोच रहा था कि शायद उसके इस उदाहरण से वे लोग यह समझ जायें कि अगर जमीन से कुछ पाना चाहते हो तो पहले उसके अन्दर वह चीज़ रखो जो तुमको उससे लेनी है और इस बात से वे गुस्सा हो जायेंगे। पर ऐसा तो वहाँ कुछ भी नहीं था।

वहाँ तो गधा बीच में खड़ा था और उसके चारों तरफ बहुत सारे लोग खड़े थे। वे सब ऐसे आश्चर्यजनक गधे को देखने के लिये वहाँ दूर दूर से आये थे।

जमींदार भी बिल्कुल गुस्सा नहीं था बल्कि खुशी से गा रहा था, चिल्ला रहा था, नाच रहा था क्योंकि वह एक ऐसे आश्चर्यजनक गधे का मालिक था।

उसने व्यापारी को देखा तो चिल्ला कर बोला — "व्यापारी, तुमने सब सच कहा था। यह जानवर तो सचमुच ही बहुत आश्चर्य की चीज़ है। तुमने हम लोगों को खुश कर दिया, हम तुमसे बहुत खुश हैं।"

व्यापारी ने यह देख कर अपना सिर पीट लिया कि किन बेवकूफों और आलसियों से उसका पाला पड़ा था।

व्यापारी जब अपनी दूकान जाता तो रोज उस भीड़ से गुजरता और उसको बिना देखे दूकान तक जाने की कोशिश करता पर कभी ऐसा होता ही नहीं। वह उस भीड़ की तरफ जरूर देखता और उनकी बेवकूफी पर सिर पीटता हुआ आगे बढ़ जाता।

एक दिन वह व्यापारी बीमार पड़ गया और कुछ दिनों बाद मर गया। व्यापारी के मरने की खबर सुन कर आसपास वाले सब लोग उसको देखने के लिये आये।

उन्होंने उसके घर की तरफ इशारा करते हुए दूसरे गॉव के लोगों से कहा — "देखो, यहॉ हमारा वह भला व्यापारी रहता था। वो ही हमारे देश में सोना उगलने वाला गधा लाया था। बड़े दुख की बात है कि वह अब हमारे बीच नहीं है।"

सामान्य रूप से लोग पूरे तरीके से बुरे तो नहीं होते पर हॉ पूरे तरीके से बेवकूफ हो सकते हैं, जैसे ये सिडामो के लोग। सिखाने के बावजूद वे कुछ भी नहीं सीख सके।

12 बोतल का सॉप[20]

बहुत पुरानी बात है कि इथियोपिया में एक बार एक राजा पूर्व दिशा की तरफ गया, पश्चिम दिशा की तरफ गया, उत्तर दिशा की तरफ गया, दक्षिण दिशा की तरफ गया। उसने बहुत सारी चढ़ाइयॉ की और बहुत सारा खजाना लूटा।

अब क्योंकि राजा अक्सर बाहर रहता था इसलिये उसने अपना खजाना रखने के लिये एक बहुत बड़ा कमरा बनवाया और उसकी चौकीदारी के लिये एक आदमी तैनात कर दिया।

यह चौकीदार दूसरों से तो खजाना बचाने में बहुत चतुर था परन्तु उसने खुद ही खजाने में से चोरी करनी शुरू कर दी।

इस तरह कई साल बीत गये उसको चोरी करते करते। वह चौकीदार उस कमरे में से थोड़ा थोड़ा करके खजाना निकालता और उसको ले जा कर अपने भंडारघर में रख देता।

इस तरह उस चौकीदार ने राजा की सारी आलमारियॉ जो सोने चॉदी और रत्नों से भरी हुई थीं, सब खाली कर दीं और उन्हें पत्थरों से भर दिया।

[20] Snake in a Bottle – an Amhara folktale from Ethiopia, East Africa

अब राजा बूढ़ा हो गया और लड़ाई के घावों की वजह से अपंग भी हो गया तो अपना खजाना देखने और भोगने के लिये घर लौटा।

चौकीदार राजा के सामने गया और सिर झुका कर बोला — "अब तो जहॉपनाह लौट आये हैं – एक बार फिर शेर अपने घर आ गया है तो अब मेरे जैसे बूढ़े चौकीदार की यहॉ कोई जरूरत ही नहीं रह गयी है इसलिये अब मुझे इजाज़त दीजिये। आपके सिवा अब इस खजाने की रक्षा आपसे ज़्यादा अच्छी और कौन कर सकता है।"

राजा बोला — "तुम सच कहते हो। तुमने बहुत साल हमारी सेवा की है इसलिये सोने से भरी हुई यह बड़ी आलमारी उठा लो और खुशी खुशी अपने घर जाओ और सुखी रहो।" चौकीदार ने वह आलमारी उठायी और घर चला गया।

चौकीदार के जाने के बाद राजा ने अपनी आलमारियॉ देखीं और देखा कि उसकी तो सारी आलमारियॉ पत्थरों से भरी पड़ी हैं। यह देख कर राजा ने अपने एक आदमी को उस बेईमान चौकीदार को लाने के लिये भेजा।

उधर चौकीदार अपनी सब सम्पत्ति ले कर दूसरे देश भाग जाना चाहता था परन्तु राजा का राज्य अब बहुत बड़ा हो गया था और चौकीदार के पास सोने चॉदी व रत्नों से लदे कई खच्चर थे।

इसलिये राजा के आदमियों ने उसको जल्दी ही राजा के राज्य की सीमा के बाहर निकलने से पहले ही पकड़ लिया और कहा — "महाराज तुमसे मिलना चाहते हैं और तुमसे कुछ कहना चाहते हैं।"

चौकीदार ने पूछा — "मगर महाराज मुझसे क्या बात करना चाहते हैं, मैंने तो कोई जुर्म नहीं किया।"

वह आदमी बोला — "यह तो उन्होंने हमें नहीं बताया पर तुमको उनके पास चलना जरूर है।"

जब चौकीदार महल में आया तो राजा ने उसको अपने सिंहासन वाले कमरे में बिठाया और बोला — "मैं तुमको एक बहुत छोटी सी कहानी सुनाना चाहता हूँ। तुम यहाँ बैठो और उस कहानी को ध्यान से सुनो...

एक बार एक साँप रेंगता हुआ खेत में बने एक घर में घुस गया। वहाँ उसने दूध से भरी तंग गरदन वाली एक खुली हुई बोतल देखी। मौका देख कर वह उस बोतल की खुली गरदन में घुसा और धीरे धीरे उस बोतल की तंग गरदन में से रेंगता हुआ नीचे जा कर दूध पीने लगा।

साँप दूध पीता गया और पीता गया और पीता गया, जब तक वह उस बोतल का सारा दूध नहीं पी गया। दूध पीने की वजह से वह इतना मोटा हो गया कि उसके लिये अब उस बोतल की तंग गरदन में से बाहर निकलना नामुमकिन हो गया।

इतना कह कर राजा रुक गया और चौकीदार की तरफ देख कर मुस्कुराया।

चौकीदार ने पूछा — "क्या यही इस कहानी का अन्त है? मुझे लम्बे सफर पर जाना है इसलिये मैं ज़रा जल्दी जाना चाहूँगा।"

राजा बोला — "अन्त तो यह नहीं है पर तुम्हारे खयाल में सॉप को उस बोतल में से बाहर निकलने के लिये क्या करना चाहिये? तुम्हारा क्या खयाल है?"

चौकीदार बोला — "अगर उस सॉप को उस बोतल में से बाहर निकलना ही है तो उसने जो दूध पिया है वह उसे उगल देना चाहिये।"

राजा बोला — "तुम ठीक कहते हो। पर क्या उसे सारा दूध उगल देना चाहिये?"

चौकीदार बोला — "अगर वह बाहर निकलना चाहता है तो उसे सारा ही दूध उगलना पड़ेगा।"

राजा बोला — "हॉ बिल्कुल ठीक, सारा का सारा।"

इतने में चौकीदार ने देखा कि राजा के सिपाही उस कमरे के हर दरवाजे से भाले लिये हुए चले आ रहे हैं। चौकीदार के पास अब कोई चारा नहीं था। उसने राजा का सारा खजाना वापस कर दिया।

राजा होशियार भी था और धीरज वाला भी। उसने अपने सिपाहियों को उस चौकीदार से खजाना छीनने की ऐसे ही आज्ञा नहीं

दी थी बल्कि एक सीख वाली कहानी सुना कर उसको ऐसा करने पर मजबूर किया।

इस कहानी से हमको दो सीख मिलती हैं। एक तो यह कि धीरज और होशियारी से मुश्किल से मुश्किल परेशानी का हल आसानी से और बिना किसी अप्रिय घटना के निकल आता है।

दूसरे किसी भी आदमी को अपनी सीमा से बाहर कोई काम नहीं करना चाहिये। अगर वह चौकीदार थोड़ी सम्पत्ति चुराता तो शायद राजा को पता न चलता परन्तु क्योंकि उसने राजा की बहुत सारी सम्पत्ति चुरायी इसी वजह से उसको यह दिन देखना पड़ा।

13 झूठी कसम खाने का फल[21]

एक बार इथियोपिया के एक गॉव में दो पड़ोसी रहते थे। दोनों ही जानवर पाल कर अपना गुजारा करते थे।

एक बार उन दोनों में झगड़ा हो गया और उस झगड़े में उनमें से एक आदमी मारा गया तो दूसरे आदमी ने उसके जानवर चुरा लिये।

जो आदमी मारा गया था उसके रिश्तेदार ने दूसरे आदमी के रिश्तेदारों से कहा कि मारने वाला आदमी उनके गॉव में रहता है और उस गॉव के नियमों के अनुसार खून के बदले में कुछ न कुछ देना होता था।

इसलिये एक दिन तय किया गया कि जिस दिन सब लोग इकट्ठा हों और इस खून का फैसला हो। दिन तय हुआ और सब लोग उस दिन मारने वाले के गॉव में जमा हुए।

मारने वाले के गॉव के बड़े लोग बोले — "आप लोग बिल्कुल चिन्ता न करें हम मारने वाले आदमी को अभी यहॉ ले कर आते हैं।"

वे गये और मारने वाले की बजाय किसी सीधे सादे आदमी को पकड़ कर वहॉ ले आये जो इस खून के बारे में कुछ भी नहीं जानता था और न ही किसी के घर में कोई काम करता था।

[21] False Oath – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, East Africa

मारने वाले के रिश्तेदारों ने उसे एक अँगूठी पहनायी, तेल लगा कर उसके बाल सँवारे, हाथ में एक भाला थमाया और उसको वहाँ ले आये। इस सबने तो उसकी शक्ल ही बदल दी थी

मरने वाले के पिता ने पूछा — "क्यों भाई, क्या तुम ही वह आदमी हो जिसने मेरे बेटे को मारा है?"

वह आदमी बोला — "जी हाँ।"

पिता ने फिर पूछा — "जब तुमने उसको भाला मारा था तब वह आगे की तरफ गिरा था या पीछे की तरफ?" इस पर वह आदमी चुप रहा।

पिता ने फिर पूछा — "तुमने भाला उसके पेट में मारा था या पीठ में?"

वह आदमी इस पर भी चुप रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह इन सवालों के क्या जवाब दे क्योंकि उसने तो उस आदमी को देखा भी नहीं था मारना तो दूर।

परन्तु वह यह कह भी नहीं सकता था क्योंकि वह पहले ही यह कह चुका था कि खून उसी ने किया है।

पिता ने फिर कहा — "ऐसा लगता है कि आप लोग हमें धोखा देने के लिये इस सीधे सादे आदमी को यहाँ ले आये हैं। अगर आप लोग मेरे पास किसी घसियारे के लड़के को लाते, या पनिहारे के लड़के को लाते तो मैं उसको कहता कि कसम खाओ कि आज से

तुम पीढ़ी दर पीढ़ी तक सबके लिये घास काटते रहोगे या पानी भरते रहोगे। पर इसको मैं क्या कहूँ?

पर हमारे गॉव के आदमी के खून के बदले में आप लोगों को कुछ तो देना ही पड़ेगा इसलिये अब यह कसम आप सबको खानी पड़ेगी।"

ऐसा कह कर उस पिता ने मारने वाले की तरफ के सब लोगों को एक काले बैल के बराबर में खड़ा करके कसम दिलायी — "हम आज से कसम खाते हैं कि जो काम हम आज कर रहे हैं वही काम हम पीढ़ी दर पीढ़ी तक सबके लिये करते रहेंगे।"

इसी वजह से उसग गॉव के लोगों के बच्चे, उनके बच्चों के बच्चे, उनके बच्चों के बच्चों के बच्चे सभी पीढ़ी दर पीढ़ी तक वही काम सब लोगों के लिये करते चले आ रहे हैं जो वे उस समय कर रहे थे।

14 दो यात्री[22]

एक सुबह की बात है कि एक व्यापारी एक गधे पर सवार हो कर एक शहर से दूसरे शहर की ओर जा रहा था। रास्ते में उसे एक और यात्री मिल गया जो उसी शहर को जा रहा था। क्योंकि दोनों को एक ही शहर जाना था सो दोनों साथ साथ ही चलने लगे।

यात्री सारी सुबह केवल अपने ही बारे में बातें करता रहा — "मैं एक बहुत ही अच्छा लड़ने वाला हूँ। मैं अपने शहर का सबसे ज़्यादा ताकतवर और बहादुर आदमी हूँ। कुछ हफ्ते पहले मैंने अपने हाथों से एक शेर मारा था। मैंने बहादुरी के और भी बहुत सारे काम किये हैं।

बहादुर होने के अलावा मैं अक्लमन्द भी बहुत हूँ। यहाँ तक कि अपने शहर के सारे अक्लमन्दों से भी अक्लमन्द हूँ। जब भी राजा को किसी सलाह की जरूरत पड़ती है तो वह हमेशा मुझसे ही सलाह लेता है। मैं ही उसको सलाह देता हूँ।"

व्यापारी उसकी ये बातें सुनता रहा परन्तु बोला कुछ भी नहीं। वे लोग सारी सुबह गधों पर सवार चलते रहे। थोड़ी देर बाद यात्री बोला — "हम लोग थोड़ी ही देर में शहर पहुँचने वाले हैं। हम लोग तीन घंटे तो चल ही चुके हैं।"

[22] Two Travelers - a folktale of Jablawi tribe of Ethiopia, Eastern Africa

दोपहर को वे दोनों शहर पहुँच गये। दोनों बहुत भूखे थे सो एक छोटे से होटल में घुस गये और एक खाली मेज देख कर उस पर जा कर बैठ गये।

उनको मेज पर बैठा देख कर एक वेटर वहाँ आया और बोला — "आप लोगों का यहाँ स्वागत है। आज हमारे पास बहुत ही स्वाददार वत[23] बना है। क्या आप लोगों ने हमारे होटल का वत पहले कभी खाया है?"

वत की तारीफ सुन कर दोनों ने उसको वत लाने के लिये कहा। कुछ ही मिनटों में वेटर लौट आया। वह एक बड़ी प्लेट में वत और दूसरी प्लेट में कुछ इन्जिरा ले आया था। वे दोनों प्लेटें ला कर उसने उन दोनों के सामने रख दीं।

पहले यात्री ने खाना शुरू किया। वह वत इतना ज़्यादा चटपटा था कि यात्री की ऑखों से पाने बहने लगा।

व्यापारी ने पूछा — "दोस्त, तुम रोते क्यों हो?"

यात्री सच बताने में शरमा रहा था इसलिये उसने झूठ बोल दिया। वह बोला — "मैं अपने गरीब भाई के बारे में सोच रहा था। गॉव वालों ने पिछले ही हफ्ते उसको फॉसी पर चढ़ा दिया

[23] Injera and Wat are the natonal food of Ethiopia. Injera is like South Indian Dosa made from Teff flour and Wat is made of red or black lentils or meat or chicken. See the pictures – Wat above and Injira below.

था। उन्होंने कहा कि वह चोर था परन्तु यह सच नहीं था। मुझे उसी का ख्याल आ गया और मैं रो पड़ा।"

व्यापारी बोला — "सुन कर बहुत दुख हुआ। मुझे यकीन है कि वह जरूर ही अच्छा आदमी रहा होगा।"

इसके बाद व्यापारी ने वत खाया तो उसको भी वह वत कुछ ज़्यादा ही चटपटा लगा और उसकी ऑखों से भी पानी बहने लगा।

यात्री ने पूछा — "दोस्त, तुम्हारे रोने की वजह क्या है?"

व्यापारी बोला — "दोस्त, मैं इसलिये रो रहा हूँ कि तुम अपने भाई के साथ फॉसी पर नहीं चढ़ा दिये गये।"

15 एक विद्यार्थी की कहानी[24]

बहुत पुरानी बात है कि किसी गॉव में एक स्कूल था। एक बार वहॉ के मास्टर जी ने बच्चों को कहा कि स्कूल में सब बच्चों को साफ कपड़े पहन कर आने हैं। पर बच्चों ने कहा कि वे साफ कपड़े नहीं पहन सकते थे क्योंकि उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वे साफ कपड़े पहन सकते।

मास्टर जी बोले कि अगर तुम्हारे पास इतने पैसे नहीं हैं तो जाओ अपने अपने पिताओं को बेच दो और उनको बेच कर जो पैसे आयें उनसे नये कपड़े खरीद लो।

अब बच्चों के पास और कोई चारा नहीं था सो उन सबने अपने अपने पिताओं को बेच दिया और नये कपड़े खरीद लिये।

कुछ दिन बाद एक बार मास्टर जी ने फिर बच्चों को इकट्ठा किया और बोले — "मेरे प्यारे बच्चों, तुम लोग अभी तक सब कुछ बहुत अच्छा करते रहे हो।

अब तुम लोगों को स्कूल के लिये एक काम और करना है वह यह कि घर जा कर तुम अपनी अपनी माताओं को बेच दो और उनके बेचने से जो पैसे मिलें उनसे बढ़िया घोड़े खरीद लो। अगर कोई भी विद्यार्थी इस काम को करने में पीछे रहेगा या हिचकिचायेगा तो उसे स्कूल से निकाल दिया जायेगा।"

[24] A Story of a Student – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

बेचारे विद्यार्थी अपने अपने घर गये और उन्होंने अपनी अपनी माताओं को बेच कर घोड़े खरीद लिये।

अगले दिन सभी विद्यार्थी अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर स्कूल आये। उनमें से एक विद्यार्थी ने बहुत ही बढ़िया सफेद घोड़ा खरीदा था।

सभी विद्यार्थियों को उनके इस काम के लिये शाबाशी दी गयी परन्तु सफेद घोड़े वाले लड़के को खास शाबाशी मिली। और इस खास शाबाशी के बदले में उसकी स्कूल से छुट्टी कर दी गयी कि अब उसको और पढ़ाई करने की जरूरत नहीं थी।

अब इस लड़के ने अपना घोड़ा उठाया और विदेश की यात्रा पर निकल पड़ा। काफी देर चलने के बाद उसे भूख लग आयी।

रास्ते में उसे एक हिरन मिल गया सो उसने उस हिरन को मार कर उसका मॉस खा लिया। पर खाने के बाद उसे प्यास भी लगी पर पानी उसे कहीं दिखायी नहीं दिया। प्यास से उसका गला सूखा जा रहा था।

इतने में उसने देखा कि उसके घोड़े की गरदन से पसीना टपक रहा है। उसने घोड़े के पसीने को एक प्याले में इकट्ठा किया और अपनी प्यास बुझायी। वह फिर अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

रात गुजारने के लिये वह एक गॉव में रुका। एक झोंपड़ी में एक बुढ़िया रहती थी उसी बुढ़िया की झोंपड़ी में उसने रात गुजारने का निश्चय किया। खाना खा कर वे दोनों बातें करने लगे।

बातों बातों में लड़के ने पूछा — "मॉ जी, क्या बात है यहॉ गॉव में कोई जवान लड़के नहीं दिखायी देते?"

बुढ़िया बोली — "क्या बताऊँ बेटा, इस गॉव में तो बहुत सारे जवान लड़के थे पर अब सब मरते जा रहे हैं।"

लड़का बोला — "कैसे मॉ जी?"

बुढ़िया बोली — "इस गॉव में एक बहुत ही सुन्दर लड़की रहती है। उसने अपनी शादी के लिये एक शर्त रखी है कि जो कोई भी उससे शादी करना चाहता है वह उस लड़की से कोई पहेली पूछेगा।

अगर उस लड़की ने उसकी पहेली नहीं बूझी तब तो वह उससे शादी कर लेगी और अगर उसने उस लड़के की पहेली बूझ ली तो उस लड़के को मार दिया जायेगा।

बेटा, वह लड़की सुन्दर होने के साथ साथ होशियार भी बहुत है। अब तक निन्यानवे लड़के उसके पास अपनी पहेलियॉ ले कर पहुँच चुके हैं पर उसने उन सभी की पहेलियॉ बूझ दीं हैं। और वे सभी लड़के मारे जा चुके हैं। इसी लिये तुमको इस गॉव में जवान लड़के कम दिखायी देते हैं।"

यह कहानी सुन कर उस लड़के का मन हुआ कि वह भी उस लड़की को देखे जिस पर इतने लड़के कुर्बान हो चुके हैं।

वह बुढ़िया से बोला कि वह भी इन निन्यानवे लड़कों की गिनती में अपना नाम लिखवाना चाहता है जिससे कि उस पर मरने वालों की गिनती पूरी सौ हो जाये।

अगले दिन वह उस लड़की के पास गया और अपनी पहेली उसके सामने रखी — "कल मैं यात्रा में था। मैंने एक पवित्र चीज़ खायी और एक अपवित्र चीज़ पी। वे क्या चीज़ें हो सकती हैं?"

लड़की बोली — "तुम्हारा सवाल सुन्दर है, कल सुबह आ कर इसका जवाब ले जाना।"

शाम को उस लड़की ने एक लड़के का वेश बनाया और उस बुढ़िया के घर जा पहुँची जिसके घर में वह लड़का ठहरा हुआ था। दोनों ने उस लड़की का बहुत आदर किया और तीनों बहुत देर तक बातें करते रहे।

जब लड़के ने उसको बताया कि वह भी अपनी पहेली ले कर उस लड़की के पास गया था तो लड़की ने उस पहेली की बड़ी तारीफ की और दुआ की कि इस बार उसको जरूर जीत जाना चाहिये।

फिर उस लड़के की पहले दिन की यात्रा के बारे में बात हुई। बातों ही बातों में उस लड़की ने पता चला लिया कि कल उस लड़के ने हिरन का मॉस खाया था और अपने घोड़े का पसीना पिया था।

इतनी सब बातें करते करते लड़के की नजर उस लड़की के सिर पर पड़ी तो उसको लगा कि उसके सिर पर बँधे कपड़े के नीचे तो बहुत सारे बाल हैं। उसको कुछ शक हो गया कि वह लड़का न हो कर कोई लड़की थी सो उसने चुपचाप उस लड़की के कुछ बाल काट लिये।

अगले दिन वह अपनी पहेली का जवाब लेने के लिये उस लड़की के घर गया। वह अब उस लड़की को तुरन्त ही पहचान गया कि कल यही लड़की लड़के के वेश में उसके घर आयी थी पर वह चुप रहा। पर उसको यह भी विश्वास था कि उसकी पहेली का जवाब देना आसान नहीं था।

जब वह उस लड़की के घर पहुँचा तो उस लड़की ने उसको तुरन्त ही उसकी पहेली का जवाब दे दिया कि उसने यात्रा में हिरन का मॉस खाया था और घोड़े का पसीना पिया था। क्योंकि जवाब ठीक था इसलिये उस लड़के को मारने का हुकुम दे दिया गया।

जब वह लड़की जाने लगी तो वह लड़का बोला — "सभी मरने वालों से उनकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है। क्या तुम मुझसे मेरी आखिरी इच्छा नहीं पूछोगी?"

लड़की मुस्कुरायी और बोली — "क्यों नहीं। बोलो नौजवान, तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है?"

लड़का बोला — "कल रात मेरे घर एक बहुत ही खूबसूरत चिड़िया आयी थी। किसी तरह मैंने उसके पंखों में से एक पंख

निकाल लिया। मैं वह पंख उसको भेंट करना चाहता हूँ और एक बार उसके हाथों को अपने हाथों में ले कर चूमना चाहता हूँ।"

इतना कह कर उसने अपनी जेब से उस लड़की के कटे बाल निकाले और आगे बढ़ा दिये। लड़की ने जब बाल देखे तो तुरन्त समझ गयी कि वह हार चुकी है।

उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को हुकुम दिया कि उसका पहला हुकुम रद्द किया जाता है और वे लोग जा सकते हैं।

दोनों की शादी हो गयी और वे आनन्दपूर्वक रहने लगे।

16 बेवकूफ नौकर[25]

एक बार इथियोपिया की राजधानी एडिस अबाबा में दो आदमी रहते थे – जोसेफ और अबेबे[26]। दोनों के पास एक एक नौकर था और दोनों के नौकर परले दरजे के बेवकूफ थे इसलिये दोनों के मालिक उनसे बहुत परेशान रहते थे।

एक दिन जोसेफ और अबेबे दोनों बाजार गये। दोनों बहुत दिनों बाद मिले थे सो दोनों में बहुत सारी बातें हुईं, अपनी खेती की, अपने परिवारों की, मौसम की आदि आदि। और फिर आखीर में बात आयी उनके बेवकूफ नौकरों की।

जोसेफ बोला — "मेरा नौकर तो इतना बेवकूफ है कि वह रोज मुर्गे की हड्डियॉ जमीन में गाड़ देता है और सोचता है कि इस तरह जमीन से एक दिन बहुत सारे मुर्गे उग आयेंगे।"

अबेबे बोला — "शायद मेरा नौकर तुम्हारे नौकर से ज़्यादा बेवकूफ है। वह सोचता है कि पेड़ों पर जब चिड़ियॉ शोर मचाती हैं बस तभी बारिश होती है वरना नहीं।"

इस तरह वे बहुत देर तक अपने अपने नौकरों की बेवकूफियों के बारे में बात करते रहे और सोचते रहे कि उनमें से किसका नौकर

[25] Foolish Servants – a folktale from Jablawi Tribe from Ethiopia, Eastern Africa.
[26] Joseph and Abebe – names of the two friends

ज़्यादा बेवकूफ है। अन्त में उन दोनों ने अपने अपने नौकरों का इम्तिहान लेने का विचार किया।

जोसेफ बोला — "हम लोग इस समस्या को इस तरह हल करते हैं कि कल दोपहर को दो बजे तुम अपने नौकर को ले कर मेरे घर आ जाओ।

फिर हम लोग अपने अपने नौकरों को कोई बेवकूफी का काम करने को देंगे। जो भी उस काम को करेगा वही ज़्यादा बेवकूफ समझा जायेगा।"

अगले दिन दोपहर को दो बजे अबेबे अपने नौकर को ले कर जोसेफ के घर पहुँच गया। जैसे ही वह जोसेफ के घर में घुसा उस ने अपने नौकर से कहा — "अरे ज़रा घर दौड़ कर तो जाओ और देखो कि मैं घर में हूँ या नहीं? मैं अपने आपसे बात करना चाहता हूँ।" अबेबे का नौकर उलटे पैरों घर वापस दौड़ गया।

अबेबे के नौकर के जाने के बाद जोसेफ ने अपने नौकर से कहा — "यह एक डालर लो और मेरे लिये एक नयी कार खरीद लाओ।" अबेबे के नौकर ने पैसे लिये और कार खरीदने के लिये चल दिया।

कुछ घन्टों के बाद दोनों नौकर सड़क पर मिले। दोनों ही बहुत गुस्से में थे। जोसेफ का नौकर बोला — "मेरे बेवकूफ मालिक ने कहा है कि मैं उसके लिये एक नयी कार खरीदूँ और इसके लिये उसने मुझे कुछ पैसे भी दिये हैं। मैं ऐसे उसकी कार कैसे खरीदूँ।

उसने मुझे कार का रंग तो बताया ही नहीं है कि उसको किस रंग की कार चाहिये।"

अबेबे का नौकर बोला — "मेरा मालिक तो इससे भी बड़ा बेवकूफ है। उसने मुझसे अपने घर जाने को कहा कि मैं वहाँ जा कर यह देखूँ कि वह वहाँ है कि नहीं।

क्या वह जोसेफ के घर से टेलीफोन करके यह बात मालूम नहीं कर सकता था कि वह वहाँ है कि नहीं? उफ़ कितना बेवकूफ है मेरा मालिक।" और दोनों घर चले गये।

कुछ दिनों बाद जोसेफ और अबेबे फिर मिले तो इसी नतीजे पर पहुँचे कि दोनों के नौकर बराबर के बेवकूफ हैं।

17 होशियार चरवाहा[27]

एक बार इथियोपिया में एक जगह एक होशियार चरवाहा रहता था। वह अक्सर दूसरे चरवाहों को पीट देता था। यह उनको अच्छा नहीं लगता था सो एक दिन दूसरे चरवाहों ने उस चरवाहे को मारने की योजना बनायी।

उन्होंने एक दस फुट गहरा गड्ढा खोदा और उसमें एक टोकरी में इन्जिरा और वत[28] रख दिया।

जब वह चरवाहा आया तो वे बोले — "आओ, तुम्हारे लिये हमने इस गड्ढे में इन्जिरा और वत रखा है, जा कर निकाल लो।"

जैसे ही उसने उस गड्ढे में झाँका तो दूसरे चरवाहों ने उसको धक्का दे दिया और वह उस गड्ढे में गिर पड़ा। ऊपर से सबने मिल कर उसके ऊपर मिट्टी डाल दी।

इस होशियार चरवाहे के पास हमेशा दो सोने की सलाइयाँ रहतीं थीं। उन सलाइयों की सहायता से उसने बड़ी मेहनत से एक सुरंग खोद ली और बाहर निकल आया।

---

[27] An Intelligent Shepherd – a folktale of Jablawi tribe of Ethiopia, East Africa

[28] Staple food of Ethiopians – see their pictures above – Wat is above and Injira is below

लेकिन जब वह बाहर निकला तो वह एक ऐसी जगह पर निकला जहाँ के लोग आदमखोर[29] थे। वह सारा दिन तो इधर से उधर घूमता रहा पर आखिर रात हो गयी तो उसको किसी घर में शरण ढूँढनी ही पड़ी।

घर की स्त्री ने कहा — "अन्दर आ जाओ।"

अन्दर आने पर उसको पता चला कि वे लोग तो आदमखोर हैं। उस स्त्री के एक लड़की भी थी।

चरवाहा यह सब देख कर डर गया। उसको पूरा विश्वास हो गया कि वह उस गड्ढे में से तो किसी तरह बच गया परन्तु अब वह यहाँ से नहीं बच पायेगा। ये दोनों ही मिल कर उसे खा जायेंगी। वह इतना ज़्यादा घबरा गया कि उसे रात भर नींद नहीं आयी।

सुबह नाश्ते में उन्होंने उसे खाने के लिये रोटी दी। जब वह रोटी खा रहा था तो उसने उस स्त्री को अपनी बेटी से यह कहते सुना — "आज दोपहर के लिये यह बड़ा अच्छा खाना आ गया है।

तुम इसके सब बाल और नाखून आदि काट कर रखना और इसको ठीक से पका कर रखना। मैं अभी बाजार जा रही हूँ। अभी थोड़ी देर में लौट कर आती हूँ तब हम दोनों इसे खायेंगे।"

[29] These people eat human beings

स्त्री के चले जाने के बाद उसकी लड़की आयी और बोली — "आओ, तुम्हारे सिर के बाल साफ कर दूँ और नाखून आदि काट दूँ।"

चरवाहा बोला — "पहले तुम अपना सिर मुँड़वाओ फिर मैं अपना सिर मुँड़वाऊँगा।"

सो पहले लड़की का सिर मुँड़वाया गया बाद में चरवाहे का।

लड़की ने कहा — "लाओ, अब तुम्हारे नाखून काट दूँ।"

चरवाहे ने फिर कहा — "पहले तुम अपने नाखून कटवाओ फिर मैं अपने नाखून कटवाऊँगा।"

सो पहले लड़की के नाखून कटवाये गये बाद में चरवाहे के।

इसके बाद लड़की बोली — "अच्छा अब ज़रा देखो कि पानी उबल गया कि नहीं।"

चरवाहा होशियार था बोला — "तुम खुद जा कर देख लो न।"

लड़की ने सोचा कि चरवाहा तो ऐसे ही कह रहा होगा सो वह पानी देखने लगी। इतने में चरवाहे ने उस लड़की को पानी की तरफ धक्का दे दिया और वह उस उबलते पानी में गिर पड़ी। अब चरवाहे ने बेटी को माँ के लिये पकाया।

फिर उसने लड़की के कपड़े पहन लिये और उस स्त्री के आने का इन्तजार करने लगा। जब वह स्त्री बाजार से आयी तो उसने अपनी लड़की से पूछा — "क्या तुमने उस आदमी को पका लिया?"

चरवाहा लड़की की आवाज में बोला "हॉ मॉ पका लिया।"

उसने उस स्त्री को पहले उसकी बेटी का रसा परसा, फिर उसकी बॉह परसी। बॉह देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "अरे, यह बॉह तो मेरी लड़की की बॉह लगती है।"

यह सुन कर चरवाहे ने लड़की की पोशाक उतार दी और पानी में पिसे हुए अलसी के बीज[30] बिखेरता हुआ बाहर की तरफ भागता हुआ बोला — "मैं वह चरवाहा हूँ जिसने एक मॉ को उसकी बेटी खिला दी।"

वह स्त्री गुस्से में भर कर उसके पीछे भागी परन्तु अलसी के बीजों पर फिसल कर गिर पड़ी। बड़ी कोशिश के बाद वह कहीं उठ पायी तो फिर उस चरवाहे के पीछे भागी।

चरवाहा भागते भागते एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ कुछ लोग खुदाई कर रहे थे। स्त्री पीछे पीछे भागी चली आ रही थी, वह वहीं से चिल्लायी — "इसको तुम पकड़ कर रखना, जाने मत देना।"

पर खुदाई करते लोगों को ठीक से सुनायी ही नहीं दिया कि वह क्या कह रही है। उन्होंने चरवाहे से पूछा कि वह क्या कह रही थी तो चरवाहा बोला — "वह कह रही है कि यह मेरा बेटा है इसे हाथ भी मत लगाना।" ऐसा कह कर वह आगे भाग गया।

[30] Translated for the word "Lin seeds or Flax seeds" – see their picture above.

भागते भागते अब वह एक खेत के पास जा पहुँचा जहाँ कुछ आदमी दाल की पकी फसल काट रहे थे। वह स्त्री अभी भी चरवाहे के पीछे पीछे भागी आ रही थी। वह फिर चिल्लायी — "इसको तुम पकड़ कर रखना, जाने मत देना।"

पर उन लोगों को भी इतनी दूर से कुछ सुनायी नहीं दिया सो उन्होंने भी चरवाहे से पूछा कि वह क्या कह रही है।

चरवाहा बोला — "यह कह रही है कि यह मेरा बेटा है, इसे हाथ भी मत लगाना, बल्कि इसे कुछ दाल दे दो।"

सो उन लोगों ने उसको कुछ दाल की फलियाँ दे दीं और वह चरवाहा वहाँ से फिर भाग लिया।

इस बार भागते भागते वह एक बन्दरों के झुंड के पास जा पहुँचा। वह स्त्री फिर चिल्लायी — "बन्दरों, इस आदमी को पकड़ कर रखो यह जाने न पाये।"

बन्दर भी इतनी दूर से उसकी आवाज नहीं सुन पाये तो वे आपस में पूछने लगे कि वह स्त्री क्या कह रही है। चरवाहा बोला — "वह कह रही है कि यह मेरा बेटा है इसे रोकना नहीं।" इतना कह कर वह फिर आगे भाग लिया।

पर उन बन्दरों में से एक बन्दर अलग बैठा था उसने वह सुन लिया था जो उस स्त्री ने कहा था। उसने यह दूसरे बन्दरों को भी बताया तो सारे बन्दर उस चरवाहे के पीछे दौड़ लिये।

दौड़ते दौड़ते वे एक गन्ने के खेत के पास आ पहुँचे। चरवाहे ने कुछ गन्ने उस खेत से तोड़ कर उन बन्दरों की तरफ फेंक दिये। बन्दर गन्ने खाने में लग गये और चरवाहा फिर भाग लिया।

भागते भागते वह एक झील के किनारे पहुँचा। वहाँ आ कर उसने भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान, तू इस झील को दो हिस्सों में बाँट दे ताकि मैं इसे पार कर सकूँ। झील तुरन्त ही दो हिस्सों में बँट गयी और चरवाहा बीच की सूखी जमीन पर दौड़ कर वह झील पार कर गया।

झील पार करके फिर उसने प्रार्थना की कि वह झील फिर से वैसी की वैसी हो जाये जैसी कि वह पहले थी। वह झील फिर से वैसी की वैसी हो गयी। अब जब वह स्त्री वहाँ पहुँची तो वह झील पार ही नहीं कर सकी।

उस स्त्री ने चरवाहे से पूछा कि इस झील को पार करने का क्या तरीका है तो चरवाहा बोला — "इस झील को पार करने के लिये मुझे अपनी एक आँख निकालनी पड़ी, एक हाथ काटना पड़ा और एक पैर काटना पड़ा।"

स्त्री ने सोचा कि चरवाहा सच कह रहा है सो उसने भी अपनी एक आँख निकाल दी, एक हाथ काट दिया और एक पैर काट दिया और झील में कूद पड़ी।

हाथ पैर न होने की वजह से वह तैर भी न सकी और वहीं झील में डूब कर मर गयी और चरवाहा खुशी खुशी अपने घर चला गया।

18 सिनज़ैरो की कहानी[31]

इथियोपिया के अम्हारा जनजाति के बच्चे और बड़े सभी इस होशियार और छोटे सिनज़ैरो की साहस भरी कहानियाँ बड़े शौक से कहते सुनते हैं। सिनज़ैरो नाम अम्हारिक भाषा[32] के सिनज़िर शब्द से निकला है। इस भाषा में इस शब्द का मतलब है "बालिश्त"।

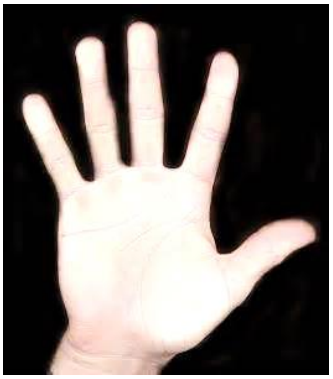

बालिश्त दूरी नापने के काम आता है। हाथ को फैलाने पर हाथ के अँगूठे की नोक से ले कर सबसे छोटी उँगली की नोक तक की दूरी को बालिश्त कहते हैं।

हालाँकि यह बहुत ही पुराने समय का नापने का ढंग है परन्तु घरों और गाँवों में आज भी नापने का यह एक आसान और बहुत लोकप्रिय तरीका है। इथियोपिया में नापने के लिये लोग इसे आज भी इस्तेमाल करते हैं।

इथियोपिया में दो बौनों की कहानियाँ बहुत मशहूर हैं — एक का नाम है सिनज़ैरो और दूसरे का नाम है "औरेटाट"[33]। औरेटाट का मतलब है अँगूठा। इन दोनों ही की कहानियाँ इथियोपिया में एक जैसी मशहूर हैं।

---

[31] Cinzerro – an Amhara folktale from Ethiopia, Eastern Africa

[32] Amhara language of Ethiopia

[33] Oretat or Aure Tat – means thumb

सिनज़ैरो की कहानियों का कोई ख़ास अन्त नहीं है परन्तु उसकी कोई कहानी ऐसी नहीं है जिसमें वह एक भला आदमी बन गया हो। पर एक बात उसके बारे में बिल्कुल सही है कि वह अपनी बूढ़ी माँ की बहुत सेवा करता था।

यह कहानी उसके जन्म और उसकी जिन्दगी की कुछ घटनाओं के बारे में है।

एक औरत थी। उसके सात लम्बे चौड़े, ताकतवर और बेवकूफ बेटे थे। उसके ये सातों बेटे घर में सारा दिन कुछ न कुछ ऊधम मचाये रखते थे।

कोई कुरसी पर बैठ जाता तो अपने बोझ से कुरसी ही तोड़ देता। किसी को भूख लगती तो वह इन्जिरा[34] की टोकरी ही खाली कर देता और साथ में वत का बरतन भी, और जब वे सोते तो सारा घर उनके खर्राटों के शोर से भर जाता।

हालाँकि वे सब बहुत ताकतवर थे परन्तु उनमें से कोई भी अपनी इच्छा से कोई काम नहीं करना चाहता था बल्कि जितनी देर वे जागे रहते दूसरों को परेशान करने में ही लगे रहते और जब सो जाते तो अपने खर्राटों से घर भर में शोर मचाते।

[34] Injira is a staple food of Ethiopians. This is like Dosa of South India. It is eaten with a kind of soup, called “Wat”. See both the pictures above – Injira over and Wat below it.

एक दिन वह औरत अपने घर से तंग आ गयी। वह भाग कर झील के एक टापू पर बनी सेन्ट स्टीफेन की मोनेस्टरी[35] की तरफ चली गयी।

उस मोनेस्टरी में किसी औरत को घुसने की इजाज़त नहीं थी क्योंकि सैंकड़ों सालों से, जबसे वह मोनेस्टरी बनी थी तभी से कोई भी औरत उसके अन्दर नहीं जा सकती थी।

वहाँ जा कर वह झील के किनारे घुटनों के बल बैठ कर मोनेस्टरी की तरफ देख कर ज़ोर ज़ोर से कहने लगी — "भगवान, आपके देवदूत[36] और सब सेन्ट मेहरबानी करके मेरी प्रार्थना सुनें।

मुझे इथियोपिया के सबसे ज़्यादा बड़े, परेशान करने वाले, भूखे और आलसी सात बेटे मिल चुके हैं। अब की बार मुझे एक बेटी चाहिये। अगर आप सब मुझे बेटी न दे सकें तो मुझे एक बहुत ही छोटा सा बेटा दें।"

भगवान प्रार्थना तो सबकी सुनते हैं परन्तु पूरी किसी किसी की करते हैं। उन्होंने उस औरत को बेटी तो नहीं दी परन्तु एक बहुत ही छोटा सा बेटा दे दिया।

वह बेटा जब पैदा हुआ तो वह आदमी के अँगूठे की लम्बाई की आधी लम्बाई के बराबर था। उस औरत को अपना छोटा सा

[35] Monastery of Saint Stephen
[36] Translated for the word "Angels"

बेटा देख कर बहुत ही खुशी हुई और उसने उसका नाम सिनज़ैरो रख दिया।

यह उस औरत का पहला बच्चा था जिसको वह अपनी बॉहों में लेकर घूम सकती थी क्योंकि दूसरे बच्चों को तो घर तक लाने के लिये भी खच्चर बुलाना पड़ता था।

काफी दिन का हो जाने के बाद भी जब सिनज़ैरो का साइज नहीं बढ़ा तो उस औरत को और भी ज़्यादा खुशी हुई। इस सबसे उसको यह भी विश्वास हो चला था कि सिनज़ैरो बहुत ही होशियार बच्चा था।

उसको अपने उस छोटे से बेटे से बस एक ही परेशानी थी कि उसका साइज छोटा होने की वजह से उसको उसे उसके भाइयों से दिन में कई बार बचाना पड़ जाता था।

और केवल भाइयों से ही नहीं उसको तो उसे कई और भी चीज़ों से बचाना पड़ता था।

एक बार कमरे का दरवाजा खुला रह गया तो वह अपनी मॉ के खर्राटों की हवा से दरवाजे के बाहर उड़ कर जा गिरा था। और उसको उसे हमेशा ही चूहे, चूजों आदि से तो बचा कर रखना ही पड़ता था।

जैसे जैसे दिन गुजरते गये सिनज़ैरो के सातों भाई सिनज़ैरो से बहुत नफरत करने लगे क्योंकि उनको लग रहा था कि उनकी मॉ सिनज़ैरो को उनसे ज़्यादा प्यार करती थी।

जब वे छोटे थे तो कभी उनकी मॉ ने उनको गोद में नहीं उठाया था, कभी उनको प्यार से नहीं चूमा था, कभी उनको गले से नहीं लगाया था पर सिनज़ैरो को वह सारा दिन अपनी गोद में लिये घूमती रहती थी।

एक बार सबसे बड़े भाई ने अपनी मॉ को अपनी बॉहों में लेने की कोशिश की थी तो उसने उसकी तीन पसलियॉ तोड़ दी थीं। और सिनज़ैरो को वह इतना प्यार करती थी कि दिन रात उसे साथ रखती थी।

इन सब बातों से तंग आ कर एक बार उन सातों भाइयों ने सिनज़ैरो को मारने की एक योजना बनायी।

सिनज़ैरो को मारने की कोशिश

एक दिन सिनज़ैरो के भाइयों ने सिनज़ैरो को अपने पड़ोसी का सबसे अच्छा बैल चुरा लाने के लिये राजी कर लिया। भाइयों ने सोचा कि उनका पड़ोसी जो एक आदमखोर था सिनज़ैरो को पकड़ लेगा और उसे खा जायेगा। पर ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ।

सिनज़ैरो उस बैल के सिर पर चढ़ गया। जब वह उसको दाहिने हाथ की तरफ ले जाना चाहता तो उसके दॉये कान पर भिनभिनाता और जब बॉये हाथ की तरफ ले जाना चाहता तो उसके बॉये कान पर भिनभिनाता।

इस तरह वह पड़ोसी के सामने ही उस बैल को जंगल की तरफ भगा कर ले गया जहाँ उसके भाई उसका इन्तजार कर रहे थे।

भाइयों को सिनज़ैरो के बच जाने का दुख तो बहुत हुआ पर बैल पाने की खुशी भी कम नहीं हुई। उन्होंने उस बैल को मारा, आग जलायी और उसका सारा माँस खुद ही खाने लगे। सिनज़ैरो को उन्होंने कुछ भी नहीं दिया।

सिनज़ैरो बोला — "भाइयो, तुम लोग बड़े हो, तुमको खाना चाहिये वह तो ठीक है, पर मुझे कम से कम इसका ब्लैडर[37] ही दे दो।" भाइयों ने उस बैल का ब्लैडर सिनज़ैरो की तरफ फेंक दिया और सिनज़ैरो ने उसका एक ढोल बना लिया।

वह उस ढोल को एक डंडी से पीटता जाता और कहता जाता — "चैरक[38] ओ चैरक, हमने तुम्हारा बैल चुरा लिया है अगर हिम्मत हो तो आ कर हमसे लड़ो। मेरे बड़े भाई तुम्हारे जादू टोनों से नहीं डरते।"

उसके भाई लोग यह सुन कर बहुत डरे और सारा माँस वहीं का वहीं छोड़ कर जंगल में भाग लिये।

उधर सिनज़ैरो चैरक के घर गया और उसका एक खच्चर चुरा लाया। उस खच्चर पर उसने वह सारा माँस लादा और अपनी माँ

[37] Bladder is that part of the body in which urine is collected.

[38] Cherok – name of an Ethiopian man

को वह खच्चर और मॉस दोनों ले जा कर दे दिये। मॉ यह सब पा कर बहुत खुश हुई।

सिनज़ैरो और उसके भाइयों के बीच तनाव बढ़ता रहा। वे हमेशा यही सोचते कि उनकी मॉ सिनज़ैरो की वजह से ही उनको प्यार नहीं करती। जब यह सिनज़ैरो नहीं रहेगा तो हमारी मॉ हमें फिर से खूब प्यार करेगी।

अन्त में हालत यह हो गयी कि सिनज़ैरो का उस घर में रहना बहुत ही मुश्किल हो गया और उसको उसके लिये खास तौर पर बनाये गये एक छोटे से मकान में जा कर रहना पड़ा।

मॉ इस सब पर बहुत गुस्सा हुई। उसने अपने सातों बड़े बेटों की शादी कर दी और उनको अलग कर दिया।

एक रात सिनज़ैरो के भाई आये और उन्होंने सिनज़ैरो के छोटे से घर में आग लगा दी। पर उसकी अच्छी किस्मत कि वह उस आग में जल कर मरा नहीं। वह अपने घर के फर्श में बने एक छेद से हो कर एक खरगोश के बिल में निकल गया और बच गया।

अगली सुबह सिनज़ैरो ने अपने जले हुए घर की राख समेटी, उसको बोरों में भरा और खच्चरों पर लाद दिया। उसने वह शहर छोड़ने का इरादा कर लिया था सो वह अपने खच्चरों के साथ वह शहर छोड़ कर चल दिया।

पहली रात वह एक अमीर आदमी के घर रुका। अगले दिन सुबह वह चिल्लाया — "अरे किसी चोर ने मेरे बोरों में से आटा चुरा कर उनमें राख भर दी है।"

जब सिनज़ैरो काफी देर तक चिल्लाता रहा तो उस अमीर आदमी को उस पर बड़ी दया आयी। इसके अलावा वह अमीर आदमी यह भी नहीं चाहता था कि उसके पड़ोसी यह सोचें कि इसी आदमी ने इस छोटे से लड़के का आटा चुराया है। इसलिये उसने सिनज़ैरो को सात बोरे आटा दे दिया।

सिनज़ैरो ने सोचा कि यह आटा माँ को दे दिया जाये। सो वह अपने घर की तरफ चल दिया। जब सिनज़ैरो आटा देने के लिये घर लौटा तो उसने अपने भाइयों को अपनी चालाकी की कहानी सुनायी कि किस तरह उसने उस अमीर आदमी को लूटा।

उसकी कहानी सुन कर सब भाइयों ने एक आवाज में कहा — "यह तो बड़ी होशियारी की चाल है।"

उन्होंने सोचा कि वे भी कुछ ऐसा ही करेंगे सो वे लोग तुरन्त ही अपने अपने घर गये और उनमें आग लगा दी। फिर उस राख को बोरों में भर कर खच्चरों पर लाद कर वे भी उसी अमीर आदमी के घर चल दिये जिसके घर में सिनज़ैरो जा कर रुका था।

पहले दिन सबसे बड़ा भाई अपने खच्चरों के साथ उस अमीर आदमी के घर पहुँचा और उसके घर रात बितायी।

अगले दिन सुबह उठ कर उसने भी सिनज़ैरो की तरह चिल्लाना शुरू कर दिया कि उस घर में उसके आटे की चोरी हो गयी लेकिन उस अमीर आदमी उसको कोई आटा नहीं दिया बल्कि उसको अपने ऊपर इलजाम लगाने के जुर्म में घर से बाहर निकाल दिया।

जब दूसरा भाई वहॉ गया और उसने भी वही चाल खेली तो उस आदमी ने उसको धक्के मार कर सड़क पर फेंक दिया और जब तीसरा भाई वहॉ गया तो उसको तो उसने डंडों से पिटवाया।

जब चौथा भाई उसके घर गया तो उसने उससे पहले ही पूछ लिया — "तुम्हारे इन बोरों में क्या है?"

वह बेवकूफ भाई बोला — "आटा।"

अमीर आदमी बोला — "यह तो बड़ा अच्छा है, आज हमारे पास आटे की कुछ कमी है सो आज रात हम तुम्हारे लिये इसी आटे की रोटी बनवायेंगे।"

सो उस रात उस भाई को राख की रोटी खाने को मिली और अगले दिन सुबह उसको बाहर निकाल दिया गया।

उस अमीर आदमी ने यही चाल पॉचवे और छठे भाई के साथ भी खेली। लेकिन जब सातवॉ भाई वहॉ आया तो वह अमीर आदमी इन चालों और इन भाइयों से तंग आ चुका था सो उसने उस पर अपने सारे कुत्ते छोड़ दिये।

सभी भाई अपने सबसे छोटे भाई को देखने के लिये आये और तय किया कि इस बार सिनज़ैरो को जरूर ही मरना चाहिये।

सिनज़ैरो को मारने की एक और कोशिश

एक रात जब उन सब भाइयों की माँ और पत्नियाँ सो रहीं थीं तो

उन्होंने सिनज़ैरो को इन्जिरा की टोकरी में रख लिया और टोकरी नदी के किनारे ले जा कर उसका ढक्कन कस कर बाँध दिया ताकि वह खुल न सके और उस टोकरी को नदी में फेंक दिया।

ऐसा करने के बाद उनको पक्का विश्वास हो गया कि अब की बार उनको सिनज़ैरो की शक्ल देखने को नहीं मिलेगी – पर जाको राखे साँइयाँ मार सके ना कोय।

नदी की धारा में बहते बहते वह टोकरी कुछ ही दूर जा कर किनारे लग गयी।

सुबह उधर से यूसुफ नाम का एक अरब व्यापारी निकला। उसने वह टोकरी देखी तो उसको खोला। टोकरी खुलते ही सिनज़ैरो उसमें से बाहर निकल आया और गाने नाचने लगा।

वह बोला — "तुम अच्छी किस्मत वाले हो। तुम ही अल्लाह के प्यारे बेटे हो।"

यूसुफ बोला — "मेरी किस्मत अच्छी क्यों है? मुझे तो इसमें केवल भीगा हुआ एक लड़का मिला है। इसमें अच्छी किस्मत होने की क्या बात है?"

सिनज़ैरो बोला — "क्या मैं तुमको कुछ अजीब सा लड़का नहीं लगता?"

यूसुफ बोला — "हॉ, वह तो तुम लग रहे हो। तुम बहुत, बहुत, बहुत ही छोटे हो।"

सिनज़ैरो बोला — "हॉ, मैं बहुत ही छोटा हूँ न इसी लिये मैं अल्लाह का पैगम्बर हूँ और अपने छोटे साइज़ की वजह से ही मैं इस टोकरी के लायक भी नहीं था। और यह टोकरी भी क्या जादू की टोकरी है कि यह हर दोपहर को सोने से भर जाती है।"

यूसुफ यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह तुरन्त ही वह टोकरी ले लेना चाहता था क्योंकि वह बहुत लालची था पर उसको थोड़ी चिन्ता भी थी।

वह बोला — "अगर मैं यह टोकरी अपने घर ले जाऊँगा तो गवर्नर मुझसे यह टोकरी ले लेगा। मैं क्या करूँ?"

सिनज़ैरो बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो इसी लिये तो अल्लाह ने इस टोकरी को जंगल में भेजा है।"

यूसुफ बोला — "मुझे एक बात सूझी है। मैं तब तक यहीं रहूँगा जब तक यह टोकरी कई बार सोने से भरती है। फिर मैं उस सोने को अपने खच्चरों पर लाद दूँगा।

मैं इस टोकरी को यहॉ पत्थरों के पीछे छिपा दूँगा फिर इस सोने को शहर ले जा कर उसमें से थोड़ा सा सोना गवर्नर को दे दूँगा और

बाकी सोना मैं अपने पास रख लूँगा। फिर जब भी मुझे सोने की जरूरत होगी मैं यहाँ से आ कर सोना निकाल लिया करूँगा।"

सिनज़ैरो बोला — "यह तो तुमने बहुत ही अक्लमन्दी की बात सोची। और यह तो मेरे लिये बहुत ही खुशी की बात है कि मेरी मुलाकात एक ऐसे आदमी से हुई जिसने पैसे के लालच में अपनी सोचने की ताकत नहीं छोड़ दी। यह तरकीब तो बहुत अच्छी है। तुम्हारे खच्चर कहाँ हैं?"

व्यापारी ने पहले अपने सिर पर हाथ मारा और फिर अपनी दाढ़ी सहलाता हुआ बोला — "अरे यह मैंने क्या कहा? मैं तो निपट बेवकूफ हूँ। मैंने तो अपने खच्चर पिछले गाँव में ही बेच कर शेख मुस्तफा को बेचने के लिये यह घोड़ा खरीदा है।"

सिनज़ैरो बोला — "कोई बात नहीं। अब तुम ऐसा करो, मैं यहाँ टोकरी के पास रहता हूँ तब तक तुम अपना यह सुन्दर घोड़ा ले कर जाओ और अपने खच्चर उससे वापस ले आओ।"

लालची व्यापारी बोला — "नहीं, ऐसा करते हैं कि मैं इस टोकरी के पास ठहरता हूँ और तुम यह पैसे और यह मेरा घोड़ा ले जाओ और मेरे खच्चर वापस ले आओ। लेकिन तुम इस जादू की टोकरी के बारे में किसी से कहना नहीं।"

सिनज़ैरो ने उगते हुए सूरज की कसम खा कर कहा कि वह इस जादू की टोकरी के बारे में किसी को कुछ नहीं बतायेगा। फिर

बोला — "तुम फिकर न करो। इतने छोटे लड़के के मुँह से यह कहानी सुन कर तो कोई बेवकूफ भी उस पर यकीन नहीं करेगा।"

यूसुफ हँसा और बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। कोई भी इस कहानी पर यकीन नहीं करेगा। मगर अब तुम जल्दी चले जाओ।"

सिनज़ैरो ने व्यापारी से पैसे लिये और घोड़े की पूँछ से होता हुआ उसकी पीठ पर बैठ गया। फिर व्यापारी से बोला — "मैं तुमको एक बात बताना तो भूल ही गया। तुम टोकरी के लिये अभी नये हो इसलिये इसमें से अगर आज सोना न निकले तो घबराना नहीं। इन्तजार करना।"

"ठीक है।"

कह कर सिनज़ैरो व्यापारी को टोकरी के पास बैठा छोड़ कर शहर की तरफ चला गया और व्यापारी उस टोकरी को लिये हुए सूरज के बीच आसमान में आने का इन्तजार करता रहा।

घोड़ा तेज़ और अच्छा था सो सिनज़ैरो जल्दी ही अपने घर पहुँच गया। घोड़ा अपनी माँ को देने के पहले सिनज़ैरो ने उसे अपने भाइयों को दिखाया। उसने उनको उस पर सवारी भी करायी। लेकिन उसने उनको यह नहीं बताया कि वह घोड़ा उसको कहाँ और कैसे मिला।

उसने उनको व्यापारी के दिये हुए पैसे भी दिखाये और कहा कि उस व्यापारी के पास वैसे कई घोड़े थे। उसने उसी के घोड़ों को

बेच कर ये पैसे कमाये थे। उसने उन पैसों में से कुछ पैसे अपनी माँ को भी दिये।

इस पर माँ अपने इतने बड़े बड़े बेटों पर खूब चिल्लायी — "तुम लोग इतने बड़े हो गये हो पर तुमने मुझे कभी कोई पैसे या घोड़ा ला कर नहीं दिया। हमेशा मुझे तंग ही करते हो। अगर यह मेरा छोटे वाला न होता तो हम सब भूखे ही मर जाते।"

पर माँ की यह बात उसके सातों बेटों में से किसी को भी अच्छी नहीं लगी।

उस रात जब सारा घर उन सातों भाइयों के खर्राटों से भर गया, यानी वे सो गये, तो सिनज़ैरो अपने सबसे बड़े भाई के बिस्तर पर गया और उसके कान में फुसफुसाया — "मुझे ये घोड़े उस नदी में मिले थे जहाँ तुमने मुझे फेंका था। वहाँ अभी और भी घोड़े हैं।

जब कल सुबह सब सो रहे होंगे तब हम वहाँ चलेंगे। जब मैं सीटी बजाऊँ तो तुम नदी पर चलने के लिये तैयार हो जाना।"

सिनज़ैरो ने अपने दूसरे भाई से कहा कि घोड़े पहाड़ पर हैं, तीसरे भाई से कहा कि घोड़े झील में हैं, चौथे भाई से कहा कि घोड़े रेगिस्तान में हैं, पाँचवे भाई से कहा कि घोड़े घास के मैदान में हैं, छठे भाई से कहा कि घोड़े जंगल में हैं और सातवें भाई से कहा कि वे गुफा में हैं।

और उन सबसे यह भी कहा कि वे सुबह उसकी सीटी की आवाज सुन कर उठ जायें और फिर वे दोनों वहाँ चलेंगे। उसके बाद फिर सिनज़ैरो ने उन सबकी टाँगें उनके पलंगों से बाँध दीं।

सुबह सिनज़ैरो ने एक सीटी बजायी तो सभी एक साथ उठ गये और सात अलग अलग दिशाओं में भागने की कोशिश करने लगे परन्तु टाँगें बँधी होने की वजह से कोई भी अपने बिस्तर से ही नहीं उठ सका और वे आपस में ही एक दूसरे को पीट पीट कर बेहोश हो गये।

सिनज़ैरो अपनी माँ से बोला — "माँ, मैं और घोड़े लाने के लिये जाता हूँ।"

माँ ने पूछा — "बेटा, वे तुम्हें कहाँ मिलेंगे?"

सिनज़ैरो बोला — "जहाँ भी बेवकूफ लोग उन पर सवारी कर रहे होंगे।"

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में Scribd पर प्रकाशित —

नीचे लिखी **36** पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।
छह टाइटिल्स Scribd पर मुफ्त पढ़े जा सकते हैं और दूसरे टाइटिल्स **1** डालर देकर उपलब्ध हैं

1 कैनेडा की लोक कथाऐं–**1** — **9** कहानियॉ — **62** पृष्ठ
2 कैनेडा की लोक कथाऐं–**2** — **10** कहानियॉ — **64** पृष्ठ
3 कैनेडा की लोक कथाऐं–**3** खरगोश — **4** कहानियॉ — **66** पृष्ठ
4 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **19** कहानियॉ — **70** पृष्ठ
5 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — **6** कहानियॉ — **60** पृष्ठ
6 नौरडिक देशों की लोक कथाऐं–**1** — **11** कहानियॉ — **88** पृष्ठ
7 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं–**1** — **7** कहानियॉ — **72** पृष्ठ
8 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं–**2** — **3** कहानियॉ — **90** पृष्ठ

9 अजीब शादियों की लोक कथाऐं–**1** — **9** कहानियॉ — **86** पृष्ठ
10 अजीब शादियों की लोक कथाऐं–**2** — **10** कहानियॉ — **95** पृष्ठ
11 रैवन की लोक कथाऐं — **20** कहानियॉ — **128** पृष्ठ
12 रैवन की लोक कथाऐं — **19** कहानियॉ — **116** पृष्ठ
13 बन्दरों की लोक कथाऐं — **10** कहानियॉ — **76** पृष्ठ
14 गरज चिड़े की लोक कथाऐं — **19** कहानियॉ — **116** पृष्ठ
15 न्याय की कहानियॉ — **14** कहानियॉ — **100** पृष्ठ
16 अकबर बीरबल की कहानियॉ–**1** — **15** कहानियॉ — **45** पृष्ठ
17 अकबर बीरबल की कहानियॉ–**1** — **15** कहानियॉ — **45** पृष्ठ
18 विक्रम बेताल की कहानियॉ–पुराण से — **9** कहानियॉ — **60** पृष्ठ
19 जानवरों की कहानियॉः अरेबियन नाइट्स से — **10** कहानियॉ — **78** पृष्ठ
20 एक प्रकार की कहानीः भिन्न भिन्न देश–**1** — **6** कहानियॉ — **56** पृष्ठ

21 लोक कथाओं में बेवकूफ — **12** कहानियॉ — **72** पृष्ठ
22 लोक कथाओं में नम्बर तीन–**1** — **12** कहानियॉ — **72** पृष्ठ
23 लोक कथाओं में फल–**1** — **6** कहानियॉ — **60** पृष्ठ
24 लोक कथाओं में फल–**2** — **6** कहानियॉ — **60** पृष्ठ
25 लोक कथाओं में फल–**3** — **8** कहानियॉ — **90** पृष्ठ
26 लोक कथाओं में फल–**3–2** — **10** कहानियॉ — **122** पृष्ठ
27 लोक कथाओं में बरतन — **9** कहानियॉ — **72** पृष्ठ
28 लोक कथाओं में नम्बर तीन — **8** कहानियॉ — **62** पृष्ठ
29 लोक कथाओं में ईसाई धर्म–**1** — **7** कहानियॉ — **60** पृष्ठ
30 लोक कथाओं में ईसाई धर्म–**2** — **12** कहानियॉ — **130** पृष्ठ

31 लोक कथाओं में सिलाई कढ़ाई कताई बुनाई — **10** कहानियॉ — **134** पृष्ठ
32 वरदानों का कमाल — **9** कहानियॉ — **112** पृष्ठ
33 आओ हॅसें हॅसाऐं — **12** कहानियॉ — **82** पृष्ठ
34 नकल करो मगर अक्ल से — **9** कहानियॉ — **94** पृष्ठ
35 जो होना था हो के रहा... — **8** कहानियॉ — **72** पृष्ठ
36 चालाक कोयोटे–**1** — **10** कहानियॉ — **80** पृष्ठ

नीचे लिखी हुई तीन पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में उपलब्ध है। ये पुस्तकें संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध हैं जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं। इनको मुफ्त प्राप्त करने के लिये सम्पर्क करें
davendrak@hotmail.com, or touchread@yahoo.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
2 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम यनी सी डी पर नीचे लिखे पते से मॅगवायी जा सकती हैं।
Write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
Price: Rs 100/= each for India
Price: $2.00 each for other countries
4 अफ्रीका की लोक कथाऐं–**1** — **11** लोक कथाऐं
3 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1** — **20** लोक कथाऐं
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं

Updated on May 27, 2016

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आगयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देखकर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2016**